सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 11 नवम्बर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 71, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

04 - शहरी संस्कृति में सहकारिता की खोज

05 - क्या नाम सिर्फ पहचान के लिये होता है?

06 - सहमति की फिसलन और सपनों की उम्र

07 - ट्रैक्टर पलटने से 16 वर्षीय किशोर की मौत

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

कोर्टरूम में फैशन: वकीलों के टूलकिट में डिजाइनर क्रांति

रुचि भट्टर

क्या आपने कभी देखा है कि एक नया वकील रील पोस्ट कर रहा हो–अपनी ताज़ा-सूती कॉलर बैंड को ठीक करते हुए, न्याय के तराजू उकेरे हुए कस्टम कीचेन को फ्लिक करते हुए, और टैग करते हुए #LawLife. जो आप देख रहे हैं वह सिर्फ कोर्ट की तैयारी नहीं है। यह एक पूरी नई लीगल लाइफस्टाइल ब्रांड का उदय है। "Trust Me" (मुझ पर भरोसा करें) लिखे मोज़े, "Not Guilty" (दोषी नहीं हूं) लिखे हुए कफलिंक, वकील का प्रतीक वाले वॉलेट और डायरी, और "Future Lawyer" (भविष्य में वकील) प्रिंट वाले मोबाइल कवर। जो पहले साधारण स्टेशनरी थे, अब यह एक क्यूरेटेड पहचान का हिस्सा बन गया है।

हाल ही में लॉ ट्विटर, LawKart के कस्टम कॉलर बैंड की बिक्री को लेकर पोस्टों से भर गया था, जिसकी कीमत 499 रुपये थी। साथ ही उपयोगकर्ताओं ने प्रसिद्ध कानूनी हस्तियों जैसे चीफ जस्टिस बी.आर. गवई, पूर्व चीफ जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़, एस.ए. बोबडे, एन.वी. रमना और शीर्ष वकील हरीश साल्वे, मुकुल रोहतगी और कपिल सिबल को टैग करते हुए मज़ाकिया समीक्षाएं साझा कीं।

भारत में Law Suits and More (LSM), LawMart, CaseGuru और M&J Services-The Eclectic Law Bookstore जैसी ई-कॉमर्स साइटें कानूनी पेशे के रोज़मर्रा के सामान को आकांक्षाओं की वस्तु में बदल रही हैं। वकील के कॉलर बैंड और कोर्ट गाउन से लेकर उकेरे हुए पेन, मग और "Not Guilty" कफलिंक–वकील का साधारण टूलकिट अब डिज़ाइनर बन गया है।

वो दिन गए जब जिला कोर्ट के बाहर यूनिफॉर्म सप्लायर से 30 रुपये का कॉलर बैंड लेने के लिए मोलभाव करना पड़ता था। आज, LawKart पर "Premium Cotton Lawyer Band" की असली कीमत 1,799 रुपये है, जिसे प्रमोशनल बंडल में दो के लिए 499 में 'कमी' रुपये दिखाई गई है। LawMart पर "Advocate Logo Magic Mug" (एडवोकेट लोगो मैजिक मग)–जो गरम कॉफ़ी डालते ही कानूनी प्रतीक दिखाता है–छूट के बाद 699 रुपये में उपलब्ध है।

इन प्लेटफ़ॉर्म्स के पास "Lawyer Essentials" और "Courtroom Collection" जैसी पूरी कैटलॉग हैं। वकील के प्रतीक वाले जेल पेन और "Lawyer Ceramic Coffee Mugs" (वकील सिरेमिक कॉफी मग) जैसे प्रोडक्ट पसंदीदा बन गए हैं, जिन पर लिखे हैं–"Have No Fear—The Lawyer Is Here." (डरो मत, वकील यहां है)

'लीगल चिक' का उदय सोशल मीडिया के कारण भी है। इन प्लेटफ़ॉर्म्स के इंस्टाग्राम पेज पर आपको ह्यूमर, कॉन्फ़िडेंस और कोर्टरूम ग्लैमर का मिश्रण मिलेगा। मॉडल–अक्सर असली वकील–धीरे-धीरे चलते हुए, गाउन बटन करते हुए, कॉलर बैंड ठीक करते हुए या "Lawyer Mugs" से कॉफ़ी पीते हुए रील में दिखते हैं। उनकी रील्स अक्सर 30,000-35,000 व्यूज़ पार करती हैं, ट्रांज़िशन और ट्रेंडिंग साउंड के साथ। अन्य ब्रांड्स मीम पोस्ट शेयर करते हैं जैसे–"When your client says 'I'll pay after the ne&t hearing," (जब आपका मुवक्किल कहता है, 'मैं अगली सुनवाई के बाद भुगतान करूंगा') और वकील 699 रुपये के मग को थामे हुए। यहां ह्यूमर, स्टाइल और थोड़ा फ्लेक्सिंग है–सब इस तरह डिजाइन किया गया कि वकील एक लाइफस्टाइल आइकन जैसा दिखे और महसूस करे।

दिलचस्प बात यह है कि कई ऐसे उद्यम स्वयं पेशेवर वकीलों द्वारा शुरू किए गए हैं। कौन बेहतर समझ सकता है कि वकील कोर्ट में क्या ले जाना चाहता है या इंस्टाग्राम पर क्या दिखाना चाहता है। Law Suits and More (LSM) को सीरत और मेहर रंधावा ने शुरू किया, जो दिवंगत बलवंत सिंह सेखों की पोतियां हैं। सेखों ने 1980 के दशक में यूनियन लॉ सेक्रेटरी और सेंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। बातचीत में सीरत रंधावा ने बताया कि यह विचार उनके पति का लॉ ऑफिस सेट करते समय जन्मा। 'मैंने ऐसे आइटम ढूंढे जो कानूनी मानसिकता को पसंद आएँ। मुझे एक ऐसा बाजार मिला जिसकी कमी थी।'

यह खोज आखिरकार 13 साल पुराना उद्यम बन गई–जो लॉ थीम वाले आर्ट और स्टेशनरी से लेकर मज़ेदार कानूनी कलेक्टिबल बेचती है। रंधावा ने कहा, "LawSuit and More कानूनी समुदाय की जरूरत का उत्पाद है। अधिकतर वकीलों और जजों को सिखाया जाता है कि मामले इतिहास और कानून से जुड़े हैं, लेकिन उनके लिए डेकोर या एक्सेसरीज़ नहीं होतीं. हमने उस कमी को पूरा किया और पेशे में मज़ा और ह्यूमर जोड़ा।' रंधावा, जिनका ब्रांड पूरी तरह महिला टीम द्वारा चलाया जाता है, ने कहा कि LSM महिला कलाकारों को रोजगार देता है, जिनमें कई वकील हैं, जो साइट के लिए कला डिजाइन करती हैं।

प्राइज निर्धारण पर उन्होंने कहा- 'हम इनपुट लागत के आधार पर मूल्य तय करते हैं ताकि स्थिरता बनी रहे। हमारा व्यवसाय पिछले 13 सालों में धीरे-धीरे बढ़ा है। क्योंकि हमारे उत्पाद बहुत अलग हैं।'

LSM का एक सबसे लोकप्रिय उत्पाद, बैंड केस, एक साधारण अनुरोध से शुरू हुआ। 'एक लॉ स्टूडेंट ने वकील की बैंड और कागजात रखने के लिए कुछ मांगा। हमने डिज़ाइन किया और हर बैच के साथ इसे बेहतर किया–अब यह वेगन लेदर में बेस्टसेलर है।' ब्रांड ने अमल क्लूनी के यूरोपियन कोर्ट ऑफ ह्यूमन राइट्स आउटफिट से प्रेरणा ली, और "The Ladies Court Collarette" (लेडीज़ कोर्ट कॉलर) बनाया–एक सूक्ष्म लेस ट्रिम वाला, वेल्क्रो कॉलर वाला पीस, जो सामान्य गाउन को अधिक स्त्रैण और कार्यात्मक बनाता है।

लेकिन सब आसान नहीं था। 'कोविड के दौरान हम लगभग बंद हो गए थे। लेकिन वकील अब ऑनलाइन आइटम मंगवाना ज्यादा पसंद करते हैं।'

वहीं मुंबई में, लॉकार्ट 'प्रीमियम लीगल गुड्स' सेगमेंट को चला रहा है। इसे भाई स्मित और धवल पटेल ने शुरू किया, जो प्रैक्टिशनर वकील नहीं हैं लेकिन बॉम्बे हाई कोर्ट के पास अपने रिटेल स्टोर के जरिए कई सालों तक उन्होंने कोर्टरूम लाइफ का अवलोकन किया। लॉकार्ट ने लक्ज़री ब्रांडिंग को अपनाया है। लॉकार्ट के लिए गाउन और कॉलर बैंड अभी भी बेस्टसेलर हैं, लेकिन कंपनी ने हाल ही में विस्तार किया है। 'हमने अभी डायरी सेक्शन लॉन्च किया है, जो बाजार में तेजी से बढ़ रहा है।'

हालांकि इन उत्पादों की कीमतें कुल मिलाकर बहुत अधिक नहीं हैं, ब्रांडिंग मार्कअप स्पष्ट है। हर आइटम सोशल मीडिया कंटेंट के रूप में भी काम करता है- वकील कॉलर बैंड या ब्रांडेड डायरी के साथ पोज़ देते हैं, जो इन्फ्लुएंसर संस्कृति और कोर्टरूम गंभीरता को जोड़ता है। इन एक्सेसरीज़ का उदय लंबे समय से मोनोक्रोम और गंभीर समझे जाने वाले पेशे की छवि को आधुनिक बनाने के बारे में है। कानूनी दुनिया, जो पहले सख्त नियमों और ऊंचे-नीचे पदों पर चलती थी, अब मज़ाक, गर्व और खुद को खुलकर दिखाने के अंदाज़ को अपनाने लगी है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

शरद की सुबह

बदले हैं तक़ाजे जो
ज़माने बदल गये
लफ़्ज़ों के कई आज
मआने बदल गये।
कुछ तौरे-सियासत
तो बदला नहीं कभी
कितने यहां निज़ाम
न जाने बदल गये।
देते नहीं सबक अब
चुपचाप देखते हैं
रुख़ देख के बच्चों का
सयाने बदल गये।
पहले भी लड़ रही थी,
अब भी लड़े है दुनिया
लड़ने के ज़रा आज
बहाने बदल गये।
अब क्या चमन में जाइये
क्या सैर कीजिए
मंज़र वहां तो अब वो
सुहाने बदल गये।
मरते नहीं हैं आशिक़,
दिलवर को मारते हैं
अब आशिक़ी के तौर
पुराने बदल गये।

– दिनेश मालवीय 'अश्क'

भारत के लिए

'वरदान' बनेगी पुतिन की यात्रा

● भारत के लिए रोजगार के नए द्वार खोलना चाहता है रूस ● अगले महीने होने वाली यात्रा में हो सकती है बड़ी डील

नई दिल्ली (एजेंसी)। घटती जनसंख्या के बीच रूस, भारत की ओर उम्मीद भरी नजरों से देख रहा है। उसे भारत के कुशल कामगारों की तलाश है। वह चाहता है कि अभी उसने भारतीयों के लिए जो कोटा सीमित कर रखा है उसे ढीला कर दे, ताकि ज्यादा से ज्यादा भारतीय रोजगार के लिए रूस जा सकें। संभावना है कि रूस में काम करने वाले भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए दोनों देश दिसंबर में होने वाली भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में समझौता कर सकते हैं। इस डील के बाद आने वाले वर्षों में रूस में काम करने वाले भारतीयों की संख्या में बड़ी बढ़ोतरी की संभावना है।

दोनों देशों के आपसी रिश्ते और मजबूत हो सकते हैं

रूसी मामलों की जानकारी रखने वाले एक एक्सपर्ट के अनुसार मित्र राष्ट्र में बढ़ रही भारतीयों की आबादी आने वाले वर्षों में दोनों मुल्कों की साझेदारी के मजबूत स्तंभ बन सकती है। इसी रिपोर्ट के अनुसार दोनों देशों का आर्थिक सहयोग भी परवान चढ़ रहा है। जानकारी के अनुसार इस साल भारत ने रूस से रिकॉर्ड मात्रा में हीरे और सोने का आयात किया है। रूसी मीडिया रिया नोवोस्ती की एक रिपोर्ट के मुताबिक इस साल अगस्त में भारत को रूस के हीरे का निर्यात बढ़कर 31.3 मिलियन डॉलर हो गया। 2024 के अगस्त में यह मात्र 13.4 मिलियन डॉलर से थोड़े ज्यादा का था। हालांकि, इस साल के पहले आठ महीनों में भारत को रूसी हीरे की कुल आपूर्ति में लगभग 40 पीसदी की कमी दर्ज की गई थी।

भारत-रूस का हीरा उद्योग यूरोप-अमेरिकी दबाव में

रूस दुनिया में कच्चे हीरे का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और यह ऐतिहासिक तौर पर भारत के विशाल हीरा उद्योग का प्रमुख सप्लायर भी रहा है। हालांकि, रूस के हीरे के कारोबार और उसकी सबसे बड़ी खनन कंपनी अलरोसा के खिलाफ अमेरिकी जुगलबंदी में पश्चिमी देशों की पाबंदियों ने भारतीय उद्योग को काफी प्रभावित किया है। ऊपर से भारतीय हीरा उद्योग डोनाल्ड ट्रंप की 50 फीसदी टैरिफ की वजह से अभूतपूर्व दबाव झेलने को अगल से मजबूर है। भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन, 2025 इस तरह का 23वां सम्मेलन है। इस बार यह 4 से 6 दिसंबर को नई दिल्ली में आयोजित हो रहा है, जिसमें रूस का प्रतिनिधित्व वहां के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन करेंगे। रिपोर्ट के अनुसार इस सम्मेलन से पहले इसी महीने के तीसरे हफ्ते में विदेश मंत्री एस जयशंकर मास्को यात्रा पर जाने वाले हैं।

बिहार में दूसरे फेज की 122 सीटों पर मतदान आज

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे फेज की 122 सीटों पर वोटिंग कल 11 नंवबर को होनी है। मतदान मंगलवार सुबह 7 बजे से शुरू होगा। इसके लिए 45,399 बूथ बनाए गए हैं। सोमवार शाम तक चुनाव कर्मी ईवीएम लेकर बूथों पर पहुंच गए हैं। 122 सीटों पर 1302 उम्मीदवार मैदान में हैं। विधानसभा चुनाव का रिजल्ट 14 नवंबर को आएगा। पहले फेज में रिकॉर्ड 65 फीसदी वोटिंग हुई थी। इमामगंज प्रखंड के हेरहज, पथरा और केवलडीह गांव के मतदाता लगभग 25 साल बाद अपने गांव में ही मतदान कर सकेंगे। 2001 में आखिरी बार वोटिंग के बाद से इन तीनों गांवों के लोग वोट नहीं डाल पा रहे थे। दरअसल, नक्सलियों के कारण प्रशासन ने इन गांवों का पोलिंग बूथ 10-12 किमी दूर सलैया बना दिया था। दूरी और ट्रांसपोर्ट की कमी के चलते ग्रामीण वहां तक नहीं पहुंच पाते थे, जिससे लोग वोटिंग से वंचित रह जाते थे। बिहार चुनाव में सीएम नीतिश कुमार की सेहत को लेकर विपक्ष ने सवाल उठाए। किसी क्रिकेटर की तरह सीएम ने जुबानी जवाब देने की जगह ताबड़तोड़ जनसभाएं कर बता दिया कि उनकी ऊर्जा कम नहीं हुई है। 16 अक्टूबर से 9 नवंबर तक नीतिश ने 181 जनसभाएं की। रोड शो किए। हर दिन जनता के बीच करीब 8 घंटे रहे। 25 दिन में 1448 घंटे फील्ड पर रहे।

● गयाजी जिले के तीन गांवों में 25 साल बाद होगी वोटिंग

● केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की लगभग 500 कंपनियां तैनात

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद ने लिया निर्णय

लाड़ली बहनों के खातों में अब आएंगे 15 सौ रुपए

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक सोमवार को मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना अन्तर्गत दी जाने वाली मासिक आर्थिक सहायता राशि 1250 रूपये में वृद्धि कर 1500 रूपये किये जाने की स्वीकृति दी गयी है। मार्च 2023 से 1000 रुपये मासिक आर्थिक सहायता राशि के साथ योजना प्रारंभ की गई थी। सितंबर 2023 से 1,250 रुपये मासिक आर्थिक सहायता राशि दी जा रही है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में 250 रुपये की वृद्धि कर नवंबर 2025 से 1500 रुपये मासिक आर्थिक सहायता राशि दिए जाने की स्वीकृति दी गयी है। योजना में 250 रुपये की वृद्धि किए जाने पर वित्तीय वर्ष 2025-26 में 1,793 करोड़ 75 लाख रुपये के अतिरिक्त बजट की आवश्यकता होगी। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 20,450 करोड़ 99 लाख रुपये संभावित व्यय होगा। मंत्रि-परिषद द्वारा ओंकारेश्वर में एकात्म धाम परियोजना अंतर्गत किये जाने वाले कार्यों के लिए सूचकांक में छूट प्रदाय किये जाने एवं आचार्य शंकर संग्रहालय 'अद्वैत लोक' के निर्माण के लिए पुनरीक्षित लागत 2424 करोड़ 369 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गयी है। संस्कृति विभाग द्वारा ओंकारेश्वर में एकात्म धाम परियोजना में आचार्य शंकर की 108 फीट की बहूधातु प्रतिमा स्थापित की जायेगी। इसके साथ ही आचार्य शंकर के जीवन और दर्शन पर आधारित शंकर संग्रहालय, (अद्वैत लोक) निर्माण, आचार्य शंकर अंतर्राष्ट्रीय वेदान्त संस्थान, अद्वैत निलयम आदि निर्माण कार्य किये जायेंगे। ये सभी निर्माण कार्य एमपीटीसी द्वारा किए जायेंगे। इसके लिए जून 2025 में 2195 करोड़ 54 लाख रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई थी। मंत्रि-परिषद ने पुनरीक्षित लागत 2424 करोड़ 369 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की।

दिल्ली में लाल किले के पास कार में धमाका, 8 की मौत, 24 घायल

नई दिल्ली। दिल्ली के लाल किला मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर-1 के पास सोमवार को पार्किंग में खड़ी एक कार में अचानक धमाका हो गया। धमाके के बाद आग इतनी तेजी से फैली कि आसपास खड़ी तीन और गाड़ियां भी जल गईं। धमाके में 8 लोगों के मरने एवं 24 के घायल होने की जानकारी है। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। फायर विभाग के अधिकारियों ने बताया कि धमाके के कारणों की जांच की जा रही है। पुलिस ने पूरे इलाके को घेर लिया है और फॉरेंसिक टीम घटनास्थल पर मौजूद है।

यूपी के सभी स्कूलों में अब अनिवार्य होगा 'वंदे मातरम'

गोरखपुर में सीएम योगी आदित्यनाथ का बड़ा ऐलान

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य के सभी स्कूलों में राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' को अनिवार्य करने का ऐलान किया है। अब प्रदेश के सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी सभी शिक्षण संस्थानों में प्रत्येक दिन की शुरुआत 'वंदे मातरम' के गान से होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'वंदे मातरम' केवल एक गीत नहीं, बल्कि देशभक्ति और राष्ट्रभावना का प्रतीक है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि इस व्यवस्था को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए और सभी विद्यालयों में अनुशासन, स्वच्छता और देशप्रेम का वातावरण सुनिश्चित किया जाए। सीएम योगी ने कहा, हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में देश के प्रति सम्मान और गर्व की भावना जगाना है। 'वंदे मातरम' के गायन से बच्चों में राष्ट्रभक्ति का संस्कार विकसित होगा। शिक्षा विभाग के अधिकारियों के अनुसार, जल्द ही इस संबंध में औपचारिक आदेश जारी किया जाएगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 11 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने 360केजी विस्फोटक किया जब्त

2 डॉक्टरों समेत 7 गिरफ्तार, 2 राइफल-2 पिस्टल भी बरामद

फरीदाबाद (एजेंसी)। हरियाणा के फरीदाबाद में एक डॉक्टर के घर से 360 किलो विस्फोटक (संदिग्ध अमोनियम नाइट्रेट) बरामद किया गया है। इसके साथ ही असॉल्ट राइफल और कारतूस भी मिले हैं। यहां जम्मू-कश्मीर पुलिस ने छापा मारा था। गिरफ्तार

डॉक्टर का नाम मुजम्मिल शकील है। यह फरीदाबाद की अलफलाह यूनिवर्सिटी में पढ़ाता था। यह पुलवामा के कोइल का रहने वाला है। इससे पहले 7 नवंबर को जम्मू-कश्मीर पुलिस ने सहारनपुर (यूपी) से डॉ. आदिल अहमद को गिरफ्तार किया गया था। यह अनंतनाग (कश्मीर) का रहने वाला है। आदिल अनंतनाग के सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रैक्टिस करता था। 2024 में इसने वहां से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद वह सहारनपुर में प्रैक्टिस करने लगा।

बेंगलुरु जेल का एक और वीडियो, कैदी कर रहे डांस

शराब पार्टी हो रही थी, आईजी ने कहा- मामले की जांच हो रही

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु की पराप्पना अग्रहरा सेंट्रल जेल का एक और सीसीटीवी सामने आया है। इसमें कैदी गाना गाते, नाचते और पार्टी करते नजर आ रहे हैं। हालांकि अभी इस वीडियो की पुष्टि होना बाकी है। 55 मिनट के वायरल वीडियो की शुरुआत में शराब की 4 बोतलें खिड़की पर सजी हुई दिख रही हैं। आगे कुछ

कैदी जमीन पर बैठकर बर्तनों को बजा रहे। 5-6 चिल्लाते हुए नाच रहे हैं। वीडियो में डिस्पोजेबल गिलास में शराब, प्लेट में कटे फल और तली मूंगफली भी दिख रही हैं। आखिर में कई मोबाइल फोन और चार्जर भी नजर आ रहे हैं। वायरल वीडियो करीब एक हफ्ते पहले का बताया जा रहा है। इससे पहले शनिवार को ही सामने आए पहले वीडियो में आतंकी जुहैब हमीद शकील मन्ना फोन इस्तेमाल करता दिख रहा था। शकील को एनआईए ने 17 नवंबर 2021 को दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया था, उस पर युवाओं को आतंकी संगठन में भर्ती करने और फंड जुटाने का आरोप है। एडिशनल इंस्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिजन्स पीवी आनंद रेड्डी ने कहा- इन कैदियों को मोबाइल फोन कैसे मिले, कौन जेल के अंदर लेकर गया जांच होगी।

एसआईआर के खिलाफ बंगाल कांग्रेस भी सुप्रीम कोर्ट पहुंची

टीएमसी का दावा-एसआईआर के डर से बंगाल में 15 मौतें हुईं

कोलकाता (एजेंसी)। बिहार के बाद 12 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में शुरू वोटर लिस्ट का रिवीजन एसआईआर को लेकर पश्चिम बंगाल में सियासत गरमा गई है। अब कांग्रेस की बंगाल यूनिट ने सुप्रीम कोर्ट में एसआईआर के खिलाफ याचिका लगाई है। जस्टिस सूर्यकांत की बेंच में यह मामला उठाया गया जो बिहार

एसआईआर मामले की सुनवाई कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट 11 नवंबर को तमिलनाडु सरकार की एसआईआर प्रक्रिया के खिलाफ याचिका पर सुनवाई करेगा। इधर, सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने दावा किया है कि 27 अक्टूबर को एसआईआर शुरू होने के बाद से अब तक 15 लोगों की मौत हुई है, जिनमें 3 महिलाएं शामिल हैं। टीएमसी ने कहा कि एसआईआर के डर से कुछ ने आत्महत्या की, तो कुछ की मौत हार्ट अटैक या ब्रेन स्ट्रोक से हुई। हालांकि भाजपा ने इसे 'राजनीतिक प्रचार' करार देते हुए आरोपों से इनकार किया है।

त्रिशूल से सेना तैयार कर रही है 'जय' फॉर्मूला

● इस खास सैन्य अभ्यास का सेना के लिए है विशेष मकसद ● तीनों सेनाओं के बीच आपसी समन्वय को मिलेगा बढ़ावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना की दक्षिणी कमांड एक खास सैन्य अभ्यास में जुटी हुई है। इस सैन्य अभ्यास का नाम त्रिशूल दिया गया है। इसका मकसद तीनों सेनाओं के बीच आपसी समन्वय को बढ़ावा देना है। इस सैन्य अभ्यास का नाम दिया गया है जय। इसका मलतब है जॉइंटनेस यानी संयुक्तता, आत्मनिर्भरता और इनोवेशन यानी नवाचार। अधिकारियों के मुताबिक यह भारतीय सशस्त्र बलों की प्रौद्योगिकी-सक्षमता और भविष्य के लिए तैयार बल के निर्माण की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। त्रिशूल अभ्यास मिशन दिखाता है कि सशस्त्र बलों की बहु-क्षेत्रीय क्षमताएं बढ़ रही हैं। साथ ही रक्षा में आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित है। इस अभ्यास का मकसद कई क्षेत्रों में सेंट्रलाइज व्यवस्था को मजबूत करना है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, साइबर, ड्रोन और काउंटर-ड्रोन संचालन, खुफिया, निगरानी और पहचान के साथ-साथ वायु रक्षा नियंत्रण और रिपोर्टिंग शामिल हैं। यह अभ्यास स्थल, समुद्र और वायु के माध्यम से निर्बाध एकीकृत सहयोग के जरिए फिजिकल और वर्चुअल क्षेत्रों में समान रूप से हावी होने की तैयारी है। ड्रोन और मानवरहित प्रणालियों का यह समावेश भारत की युद्ध नीति को नेटवर्क-केंद्रित और ऑटोनोमस युद्ध की दिशा में आगे बढ़ा रहा है।

आतंकी नेटवर्क के खात्मे के लिए तगड़ा ऑपरेशन

कश्मीर में 100 लोग हिरासत में, पूछताछ है जारी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों के नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत घाटी से 100 से अधिक लोगों को पूछताछ के लिए उठाया गया है। पिछले दो दिनों में कश्मीर घाटी और जम्मू प्रांत दोनों में दर्जनों घरों पर छापेमारी की गई। ये छापे उन लोगों पर केंद्रित थे जिन पर आतंकवादी समर्थक होने, पाकिस्तान या पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से सक्रिय आतंकवादियों के रिश्तेदार होने और आतंकी समूहों के पूर्व ओवर ग्राउंड वर्कर होने का आरोप है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि आतंकवाद का ऑनलाइन महिमामंडन किए जाने और युवाओं को कट्टरपंथी बनाए जाने के बारे में विश्वसनीय खुफिया जानकारी मिली थी।

● डिजिटल उपकरणों सहित कई सबूत जब्त- प्रवक्ता के मुताबिक, फॉरेंसिक जांच के लिए सिम कार्ड, मोबाइल फोन, टैबलेट और कई तरह के डिजिटल उपकरणों सहित कई सबूत जब्त किए गए हैं। जब्त सामग्री से अहम सुराग मिलने की उम्मीद है, जिससे आगे की जांच और अतिरिक्त कार्रवाई का रास्ता साफ होगा। उन्होंने कहा, इस कार्रवाई का मकसद डिजिटल खतरों को उनके स्रोत के स्तर पर ही समाप्त करना है।

2 स्पेशल पुलिस ऑफीसर्स सेवा से बर्खास्त

इस बीच, जम्मू प्रांत के कठुआ जिले में 2 स्पेशल पुलिस ऑफीसर्स को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया। दोनों पर आतंकवादियों की मदद करने का आरोप था और पिछले साल उन्हें गिरफ्तार किया गया था। जम्मू के रामबन, डोडा और राजौरी जिलों में भी छापेमारी की गई। वहीं, दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग में पुलिस ने पाकिस्तान में बैठे आतंकवादियों के घरों पर छापेमारी की, जिनमें हिजबुल मुजाहिदीन के टॉप कमांडर गुलाम नबी खान उर्फ आमिर खान भी शामिल हैं। पुलिस के आधिकारिक बयान में कहा गया, खुफिया जानकारी के आधार पर पुलिस ने सुरक्षा एजेंसियों की मदद से विभिन्न स्थानों पर घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया।

एसआईआर मुहिम: नमाज के बाद मुस्लिमों के लिए आयोजित किए जा रहे ट्रेनिंग सेशन

बंगाल में 40,000 मस्जिदों से विशेष अभियान शुरू

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल सहित देश के कई राज्यों में वोटर लिस्ट एसआईआर प्रक्रिया चल रही है। पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक संगठनों, मस्जिद समितियों और वरिष्ठ धर्मगुरुओं ने मुसलमानों को वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन फॉर्म भरने में मदद के लिए विशेष अभियान शुरू किया है। मुस्लिम संगठनों का कहना है कि यह यह पहल 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले मुस्लिम समुदाय में संभावित परेशानी और भ्रम को दूर करने के लिए की गई है। राज्यभर में लगभग 40,000 मस्जिदों से लेकर मुस्लिम बहुल इलाकों में चलाए जा रहे जनसंपर्क कार्यक्रमों के जरिए इमामों और सामाजिक संगठनों ने लोगों से अपील शुरू की है। वे लोगों से कह रहे हैं कि शांत रहें, एसआईआर फॉर्म सावधानी से भरें और घबराने से बचें।

धार्मिक नेता निभा रहे हैं सक्रिय भूमिका- कोलकाता में हर साल रेड रोड पर होने वाली नमाज का नेतृत्व करने वाले काजी फजलुर रहमान (इमाम-ए-दीन) ने कहा कि धार्मिक नेता लोगों को

जागरुक करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा, इमाम की जिम्मेदारी केवल मिंबर (मस्जिद के मंच) तक सीमित नहीं है। हम लोगों से कह रहे हैं कि घबराएं नहीं और एसआईआर प्रक्रिया को समझें। मस्जिद समितियां लोगों की फॉर्म भरने में मदद कर रही हैं ताकि डर और भ्रम को दूर करने के लिए जागरुकता बढ़ाई जा सके। पश्चिम बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया 4 नवंबर से शुरू हुई। राज्यभर के 80,000 से ज्यादा बीएलओ को घर-घर जाकर फॉर्म बांटने और दस्तावेजों की जांच करने की जिम्मेदारी दी गई है। यह पूरी प्रक्रिया 4 दिसंबर तक चलेगी। इसके बाद 9 दिसंबर को प्रारंभिक मतदाता सूची (ड्राफ्ट रोल) जारी की जाएगी। लोग अपने दावे और आपत्तियां 8 जनवरी तक दर्ज करा सकेंगे। इसके बाद 31 जनवरी तक सुनवाई होगी। अंतिम मतदाता सूची 7 फरवरी, 2026 को जारी की जाएगी। यह राज्य के महत्वपूर्ण विधानसभा चुनावों से पहले का अहम कदम माना जा रहा है।

नमाज के बाद आयोजित किए जा रहे ट्रेनिंग सेशन- कोलकाता की नखोदा मस्जिद के इमाम मौलाना शफीक कासमी ने कहा कि करीब 10 करोड़ लोगों के लिए एसआईआर प्रक्रिया को इतने कम समय में पूरा करना संभव नहीं है, और इससे परेशानी या उत्पीड़न की स्थिति पैदा हो सकती है। कासमी ने कहा, यह लोगों के लिए परेशानी बन जाएगी साहब।

नगरीय प्रशासन मंत्री विजयवर्गीय ने किया 33/11 के.वी. सब स्टेशन का लोकार्पण

भोपाल। नगरीय प्रशासन मंत्री एवं धार जिले के प्रभारी मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने धार जिले के बाग के अखाड़ा में रिवेम्प्ड डिस्ट्रिब्यूशन सेक्टर स्कीम आरडीएसएस अंतर्गत नए 33/11केवी सब स्टेशन का लोकार्पण किया। उन्होंने प्रदेश शासन को किसानों, ग्रामीणों समेत सभी वर्ग के लिए कल्याणकारी सरकार निरूपित किया। इस अवसर पर धार जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सरदार सिंह मईड़ा समेत अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के धार अधीक्षण यंत्री श्री आशीष आचार्य ने बताया कि करीब पौने तीन करोड़ की लागत के इस नए सब स्टेशन से अखाड़ा, महेशरा, सिरपानी, पिपरियापानी, डिलवानी समेत करीब 7 ग्रामों एवं अन्य फलियों के बिजली उपभोक्ताओ को फायदा मिलेगा। इस नए सब स्टेशन से आपूर्ति के बाद बाग सब स्टेशन पर लोड घटेगा। उन्होंने बताया कि धार जिले में आडीएएस अंतर्गत प्रत्येक बिजली संभाग में सब स्टेशन, केबल, ट्रांसफार्मर, पोल, कंडक्टर इत्यादि के कार्य बड़ी संख्या में हो रहे हैं।

स्थानीय जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण हो लक्ष्य: मुख्य सचिव

मुख्य सचिव श्री जैन ने जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की

भोपाल। जनजातीय गौरव दिवस 2025 धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा 150वीं जयंती समापन वर्ष के कार्यक्रम में स्थानीय जनजाति समुदाय के सशक्तिकरण के लिए योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने सोमवार को मंत्रालय में 15 नवम्बर को होने वाले जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम की तैयारियों की बैठक लेकर समीक्षा की। राज्य स्तरीय समारोह जबलपुर और आलीराजपुर में आयोजित होंगे। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जबलपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में सम्मिलित होंगे।

मुख्य सचिव श्री जैन ने निर्देश दिए कि राज्य-स्तरीय कार्यक्रम के अलावा जिलों, विकासखंडों में स्थानीय कार्यक्रमों के साथ ग्राम पंचायतों में ग्राम सभाओं में गौरव दिवस आयोजित किया जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जबलपुर के कार्यक्रम में वर्चुअल शामिल होंगे। मुख्य

सचिव श्री जैन ने निर्देश दिए कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के साथ ही अन्य जनजातीय नायकों के सम्मान में भी कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिवार राष्ट्रीय एवं राज्यस्तर पर ख्याति प्राप्त कलाकारों, जनजातीय मुखियाओं, मेधावी विद्यार्थियों एवं खिलाड़ियों के सम्मान के साथ हितग्राहियों को लाभ वितरण होगा। राज्य स्तरीय कार्यक्रम के अलावा जिला स्तरीय और स्थानीय कार्यक्रम में विभिन्न विभागों की योजनाओं का भूमि-पूजन तथा लोकार्पण भी होगा। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि जनजातीय हितग्राहियों से संबंधित समस्त विभागों की योजनाओं तथा नवाचारों की प्रदर्शनी लगाई जाए। आयुष्मान योजना और सिकल सेल एनीमिया के कार्ड वितरण के अतिरिक्त आदि कर्मयोगी अभियान, पीएम जन-मन एवं धरती आबा अभियान के तहत गतिविधियों को प्रदर्शित किया जाएं।

भारत ने छोड़ा आयनी एयरबेस, पाक-चीन हुए खुश

● तजाकिस्तान के आयनी एयरबेस को भारत ने किया खाली ● पीओके, चीन पर रहती थी नजर, रणनीतिक रूप से था खास

दुशांबे (एजेंसी)। भारत ने अपने एकमात्र पूर्ण विकसित विदेशी एयरबेस को खाली कर दिया है। यह ताजिकिस्तान स्थित आयनी एयरबेस है, जहां से करीब तीन साल चली प्रक्रिया के तहत भारत ने वापसी की है। इससे भारत की मध्य एशिया में दो दशकों की रणनीतिक सैन्य उपस्थिति खत्म हो गई है। भारत की वापसी 2022 में शुरू हो गई थी लेकिन इसके बारे में ज्यादा जानकारी पिछले महीने सामने आई। इसने भारत के दीर्घकालिक क्षेत्रीय प्रभाव और सुरक्षा स्थिति पर सवाल खड़े किए हैं। ऐसे में भारत के अगले कदम पर भी नजर होगी। रिपोर्ट के मुताबिक, ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे के पास स्थित आयनी एयरबेस सोवियत काल के दौरान बनाया गया था। सोवियत संघ के पतन के बाद यह जीर्ण-शीर्ण हो गया था। भारत ने 2002 के एक द्विपक्षीय समझौते के तहत इसे फिर से बनाया और बेस के आधुनिकीकरण के लिए करीब 80

मिलियन डॉलर खर्च किए। **भारत ने बनाए नए रनवे, हैंगर-** आयनी बेस पर भारत के सीमा सड़क संगठन ने 3,200 मीटर लंबे रनवे का पुनर्निर्माण किया। इसके अलावा हैंगर और ईंधन डिपो बनाए। साथ ही हवाई यातायात नियंत्रण प्रणाली स्थापित की। इससे यह बेस लड़ाकू जेट और भारी परिवहन विमानों, दोनों के लिए उपयुक्त हो गया। आयनी में एक समय 200 से ज्यादा भारतीय सैन्यकर्मी और सुखोई-30 एसयू जैसे लड़ाकू विमान तैनात थे। आयनी की अहमियत को इसकी भौगोलिक स्थिति से समझा जा सकता है। यह अफगानिस्तान के वाखान कॉरिडोर से 20 किलोमीटर दूर स्थित है, जो पीओके और चीन के शिनजियांग प्रांत की सीमा से लगी एक संकरी जमीनी पट्टी है। ऐसे में यह भारत को भूराजनीतिक रूप से संवेदनशील इस क्षेत्र तक दुर्लभ रणनीतिक पहुंच प्रदान करता है। कहा जा रहा है कि आयनी में भारत की उपस्थिति ताजिकिस्तान के साथ हवाई अड्डों के पुनर्स्थापन और विकास के लिए एक सीमित द्विपक्षीय समझौते का हिस्सा थी। यह समझौता 2022 में समाप्त हो गया। ऐसे में समझौता खत्म होने के बाद भारत ने औपचारिक रूप से यह सुविधा ताजिक सरकार को वापस सौंप दी। राजनयिक सूत्रों का कहना है कि इसके पीछे मध्य एशिया के दो प्रमुख देश रूस और चीन हैं। इन दोनों देशों की ओर से तजाकिस्तान पर भारत के साथ आयनी बेस का नवीनीकरण ना करने का दबाव डाला गया। इसके चलते 2022 के बाद भारत ने धीरे-धीरे अपने कर्मियों को वापस बुलाते हुए बेस खाली कर दिया। आयनी एयरबेस भारत का अकेला ऐक्टिव विदेशी सैन्य अड्डा था।

भारत के पास कोई बेस नहीं

आयनी खाली करने के बाद भारत का अब किसी अन्य देश में कोई कार्यात्मक विदेशी सैन्य अड्डा नहीं रह गया है। हालांकि साल 2024 में भारत और मॉरीशस ने पश्चिमी हिंद महासागर में द्वीपों के छोटे समूह अगालेगा पर उन्नत हवाई पट्टी बनाई है। ये सुविधा अफ्रीका के पूर्वी तट के जलक्षेत्र में भारत की पहुंच और निगरानी बढ़ाती है। उत्तरी अगालेगा द्वीप पर नई हवाई पट्टी भारतीय नौसेना को पहले से उपयोग में आ रहे डोर्नियर विमानों के अलावा बड़े समुद्री टोही विमानों का संचालन करने की अनुमति देती है। इसके अलावा भारत भूटान में एक सैन्य प्रशिक्षण दल रखता है, जो रॉयल भूटान आर्मी और रॉयल बॉडीगार्ड ऑफ भूटान के कर्मियों को ट्रेनिंग देता है।

स्टेच्यू ऑफ यूनिटी केवड़िया में मनाया जाएगा मध्यप्रदेश दिवस

भारत पर्व 2025 में मध्यप्रदेश की संस्कृति, पर्यटन और स्वाद का होगा अद्भुत संगम

भोपाल। भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर स्टेच्यू ऑफ यूनिटी केवड़िया गुजरात में 1 नवंबर से 15 नवंबर तक 'भारत पर्व' का उत्साहपूर्वक आयोजन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के विशिष्ट आतिथ्य में भारत पर्व 2025 के अंतर्गत मंगलवार, 11 नवंबर को गुजरात के केवड़िया में मध्यप्रदेश दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस आयोजन का उद्देश्य 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के ध्येय को दृष्टिगत रखते हुए देश की विविधता में एकता को प्रदर्शित करना है।

संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने बताया कि भारत पर्व के अंतर्गत मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा लगभग 25 वर्गमीटर क्षेत्रफल में एक आकर्षक थीम पेवेलियन तैयार किया गया है, जिसमें राज्य की पर्यटन, संस्कृति और हस्तशिल्प विरासत को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया जा रहा है। पेवेलियन में सांची, खजुराहो, भीमबेटका, मांडू, ओरछा, उज्जैन और ओंकारेश्वर जैसे ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों के साथ-साथ बांधवगढ़, कान्हा और पेंच जैसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों की झलक प्रस्तुत की जा रही है। साथ ही, राज्य के स्थानीय हस्तशिल्प और हस्तकला जैसे चंदेरी और महेश्वरी वस्त्र, बाघ प्रिंट, डोकरा कला, मिट्टी के बर्तन और गोंड पेंटिंग को भी प्रदर्शित किया जा रहा है।

अपर मुख्य सचिव पर्यटन, संस्कृति गृह और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि भारत पर्व हमारे देश की सांस्कृतिक एकता और विविधता का सुंदर उत्सव है। मध्यप्रदेश 'भारत का हृदय' है, और यहां की हर परंपरा, हर स्वाद, हर कला रूप हमारे देश की आत्मा को दर्शाता है। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के पर्यटन, हस्तशिल्प, व्यंजनों और संस्कृति की प्रस्तुति के माध्यम से हम देशभर के आगंतुकों को अतुलनीय मध्यप्रदेश की आत्मा से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। हमारी कोशिश है कि आगंतुक न केवल मध्यप्रदेश के स्वाद और संगीत का आनंद लें, बल्कि उसकी आत्मिक ऊर्जा और जीवंतता का भी अनुभव करें।

स्टूडियो किचन में मध्यप्रदेश का स्वाद

मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम (एमपीएसटीडीसी) द्वारा 11 नवंबर को स्टूडियो किचन की विशेष प्रस्तुति दी जा रही है, जिसमें प्रदेश के पारंपरिक और प्रादेशिक व्यंजन लाइव तैयार कर परोसे जाएंगे। यह प्रस्तुति फ्लेवर्स फ्रॉम द हार्ट ऑफ इंडिया की थीम पर आधारित है। बुंदेलखंड क्षेत्र का खट्टा-तीखा छाछ पर आधारित पेय सन्नाटा, डिंडोरी क्षेत्र का पारंपरिक सूप कंगनी दाल का शोरबा, मालवा का प्रसिद्ध स्नैक भुट्टे की कीस, चना बेसन से बना स्वादिष्ट नमकीन व्यंजन चंबल का थोपा, सीधी क्षेत्र का पारंपरिक नाश्ता बेड़ई धुमना आलू, बघेलखंड क्षेत्र का लोकप्रिय व्यंजन मटर का निमोना और सादी पूरी, शहडोल क्षेत्र की प्रसिद्ध मिठाई कुटकी की खीर आगंतुकों को परोसे जाएंगे। इन व्यंजनों के माध्यम से प्रदेश के विविध भौगोलिक और सांस्कृतिक स्वादों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

सांस्कृतिक प्रस्तुति – 'अमृतस्य मध्यप्रदेश'

संस्कृति विभाग की ओर से प्रसिद्ध नृत्य संयोजिका मैत्रीय पहाड़ी एवं समूह द्वारा 'अमृतस्य मध्य प्रदेश' शीर्षक से एक भव्य नृत्य प्रस्तुति दी जाएगी। यह प्रस्तुति दर्शकों को मध्यप्रदेश की प्राचीन सभ्यता, भक्ति, प्रेम और प्रकृति की लय से जोड़ती है। इस नृत्यगाथा की शुरुआत भीमबेटका की गुफाओं से होती है, जहां मानव सभ्यता की प्रथम झलक दिखाई देती है। आगे खजुराहो के मंदिरों की मूर्तिकला, सांची के स्तूपों की शांति, और चित्रकूट की पवित्र भूमि के भावनात्मक दृश्यों को नृत्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। उज्जैन और ओंकारेश्वर के ज्योतिर्लिंगों की दिव्यता, ग्वालियर किले की ऐतिहासिकता, मांडू की प्रेम गाथा और ओरछा के मंदिरों की भव्यता मंच पर जीवंत होती है। प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंध को बांधवगढ़, कान्हा और पेंच के वनों तथा जबलपुर की संगमरमर चट्टानों के दृश्यों से दर्शाया गया है। पारंपरिक महेश्वरी, चंदेरी और बाग प्रिंट वस्त्रों में सजे कलाकार मंच पर राज्य की शिल्प विरासत का गौरव गान करते हैं। नर्मदा आरती के दृश्य के साथ यह यात्रा अपने आध्यात्मिक उत्कर्ष पर पहुंचती है।

प्रदेश में गांजा तस्करों पर शिकंजा कसने की तैयारी

पुलिस ने शुरू किया अभियान, दो दिन में 75 लाख का गांजा जब्त

भोपाल। मध्यप्रदेश पुलिस ने नशे के खिलाफ अभियान शुरू किया है। इसके तहत दो दिन में प्रदेश के अलग-अलग जिलों में करीब 75 लाख रुपए का गांजा जब्त किया जा चुका है। प्रदेश को नशामुक्त करने के लिए पुलिस लगातार नशे के सौदागरों पर शिकंजा कस रही है। तस्करी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले वाहनों को भी पुलिस ने जब्त किया है। सीधी पुलिस ने नशीली कफ सीरप, गांजा और अवैध शराब सहित रू. 2.20 लाख का माल जब्त किया है। चौकी खड्डी पुलिस ने 20 शीशियां ऑनरेक्स कफ सीरप जब्त कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। बाइक और मोबाइल सहित कुल रू. 1.03 लाख का मशरुका जब्त किया गया। सतना पुलिस की नागौद थाना क्षेत्र में खेत में अवैध रूप से गांजा उगाने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर 18 पौधे (7.820 किग्रा, कीमत रू. 78,200) जब्त किए गए हैं।

खरगोन पुलिस ने 20 लाख रुपए का गांजा पकड़ा

खरगोन की चैनपुर थाना क्षेत्र में गांजा की अवैध खेती पर बड़ी कार्रवाई करते हुए NDPS एक्ट के तहत दो केस दर्ज किए। खेतों से 190 गांजे के पौधे (397 किग्रा, अनुमानित कीमत रू. 20 लाख) जब्त किए गए। शिवपुरी की करैरा थाना पुलिस ने आरोपी मेघराज परिहार को गिरफ्तार कर 25.6 किलोग्राम अनुमानित कीमत लगभग रू. 2.60 लाख के गांजे के पौधे बरामद किए। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है। रीवा की चोरहटा थाना पुलिस ने कार से 557 शीशियां कोडीन युक्त कफ सिरप, कुल रू. 4.12 लाख का मशरुका जब्त किया। दूसरी कार्रवाई में इनोवा कार से 105.980 किग्रा गांजा (कीमत रू. 21.20 लाख) बरामद कर कुल रू. 41.20 लाख का मशरुका जब्त किया गया। एक आरोपी गिरफ्तार हुआ। मंदसौर की थाना नारायणगढ़ ने अंतरजिला तस्करों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए ट्रैक्टर के टायरों में छिपाकर ले जाए जा रहे 150 किग्रा डोडाचूरा (कीमत रू. 3 लाख) जब्त किया। इसी तरह भोपाल क्राइम ब्रांच ने एक गांजा तस्कर को अभिरक्षा में लेकर 4.040 किग्रा गांजा (कीमत रू. 1 लाख) जब्त किया। छतरपुर की थाना सिविल लाइन पुलिस ने कार्रवाई कर ढाई लीटर नशीला सिरप और 70 टैबलेट जब्त किए। दो आरोपियों को NDPS एवं ड्रग्स कंट्रोल एक्ट के तहत गिरफ्तार किया है।

बोलेरो ने सिग्नल पर खड़े वाहनों को टक्कर मारी

भोपाल में बाइक को घसीटती ले गई सरकारी विभाग में अटैच है कार

भोपाल। भोपाल में एक तेज रफ्तार कार ने ट्रैफिक सिग्नल पर खड़े कई वाहनों को टक्कर मार दी। इस हादसे में एक कार सवार और दो बाइक सवार घायल हो गए। एक बाइक घसीटता ले गया। ये घटना रविवार रात करीब 11 बजे शहर के बागसेवनिया थाना क्षेत्र के दानिश नगर चौराहे पर की है। टक्कर मारने के बाद आरोपी कार लेकर मौके से फरार हो गया। हालांकि पुलिस ने पीछा कर उसे नर्मदापुरम रोड पर पकड़ लिया। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान निखिल भालेराव (उम्र 24 वर्ष) निवासी बाड़ी बरेली, जिला रायसेन के रूप में हुई है। जांच में सामने आया कि आरोपी शराब के नशे में था और अपने दोस्त की कार लेकर भोपाल आया था। यह कार एक सरकारी विभाग में अटैच कॉमर्शियल वाहन है। आरोपी निखिल ने पूछताछ में बताया कि वह कार की सर्विसिंग के लिए बाड़ी बरेली से भोपाल आया था। रविवार रात वह नर्मदापुरम रोड पर तेज रफ्तार में कार चला रहा था। तभी दानिश नगर चौराहे पर सिग्नल पर खड़े वाहनों को अचानक टक्कर मार दी। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। बागसेवनिया थाना पुलिस ने घेराबंदी कर कुछ ही दूरी पर आरोपी को पकड़ लिया। हादसे में किसी को गंभीर चोट नहीं आई, लेकिन तीन लोग मामूली रूप से घायल हुए हैं। पुलिस ने कार जब्त कर ली है और आरोपी के खिलाफ लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाने और नशे में ड्राइविंग का मामला दर्ज कर लिया है।

मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी स्व. बनर्जी की जयंती पर किया नमन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वतंत्रता सेनानी, स्वतंत्रता सेनानी स्व. सुरेंद्रनाथ बनर्जी की जयंती पर नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्री बनर्जी ने शिक्षा के व्यापक प्रसार में योगदान दिया। उन्होंने छात्रों में देशभक्ति और सार्वजनिक सेवा की भावना को सुदृढ़ता प्रदान की। राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए उन्हें सदैव याद किया जाएगा।

38 उच्च शिक्षण संस्थानों को एनआईआरएफ की प्रक्रिया में शामिल होने प्रशिक्षण

भोपाल। प्रदेश के उच्च शिक्षण संस्थानों एनआईआरएफ से मिलने वाले अंक के लिए आवेदन कर सके, इसके लिए प्रदेश के 38 उच्च शिक्षण संस्थानों (विश्वविद्यालय-महाविद्यालय) को प्रशिक्षण दिया जाएगा। उच्च शिक्षण संस्थानों को यह प्रशिक्षण प्रति मंगलवार ऑनलाइन दिया जाएगा, जो पांच सप्ताह तक चलेगा। उच्च शिक्षा विभाग ने इसके लिए बकायदा कार्ययोजना भी तैयार कर ली है। प्रशिक्षण के लिए चयनित महाविद्यालयों को एनआईआरएफ के बारे में विशेषज्ञों द्वारा अवगत कराया जाएगा। साथ ही उसके मापदंड भी बताए जाएंगे। प्रति मंगलवार को होने वाले इस प्रशिक्षण में अलग अलग विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) के माध्यम से उच्च शिक्षा संस्थानों को उनकी गुणवत्ता और प्रदर्शन के आधार पर रैंक करने की एक प्रक्रिया है। यह देश भर के संस्थानों को रैंकिंग प्रदान करने के लिए एक पद्धति का उपयोग करता है। साथ ही विभिन्न मापदंडों जैसे शिक्षण, सीखने और संसाधन, अनुसंधान, स्नातक परिणाम, समावेशिता और सहकर्मी धारणा के आधार पर संस्थानों का मूल्यांकन करता है।

भावांतर योजना में आज 4036 रुपए प्रति क्विंटल का मॉडल रेट

भोपाल। भावांतर योजना 2025 अंतर्गत सोयाबीन विक्रेता किसानों के लिए आज भी 10 नवंबर को 4036 रुपए प्रति क्विंटल का मॉडल रेट जारी किया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया है कि यह मॉडल रेट उन किसानों के लिए है जिन्होंने अपनी सोयाबीन की उपज मंडी प्रांगणों में विक्रय की है। इस मॉडल रेट के आधार पर ही भावांतर की राशि की गणना की जाएगी। मॉडल रेट में लगातार 2 दिनों से वृद्धि जारी रही।

पहला मॉडल रेट 7 नवंबर को 4020 रुपए प्रति क्विंटल जारी हुआ था। इसी तरह 8 नवंबर को 4033 रुपए और 9 नवंबर को 4036 रुपए प्रति क्विंटल का मॉडल रेट जारी हुआ।

प्रदेश में वंचित वर्गों के बच्चों की शिक्षा के लिये छात्रावास

रानी लक्ष्मीबाई आत्मरक्षा योजना के माध्यम से बालिकाओं को विशेष प्रशिक्षण

भोपाल। प्रदेश में बेघर, अनाथ, पन्नी बीनने वाले, प्लेटफार्म, बस स्टैण्ड में पाये जाने वाले शाला से बाहर बच्चों के लिये स्कूल शिक्षा विभाग ने जिलों में 100 सीटर बालक आवासीय छात्रावास का प्रावधान किया हुआ है। वर्तमान में 66 बालक आवासीय छात्रावासों में 6 हजार 600 बच्चों को लाभान्वित किया जा रहा है।

बालिका छात्रावास- इसी तरह प्रारंभिक शिक्षा सुविधा से वंचित रहने वाली बेघर, अनाथ, शाला से बाहर बालिकाओं के लिये उनकी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने तक उन्हें आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिये बालिका छात्रावास योजना नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नाम से संचालित हो रही है। प्रदेश में संचालित 324 बालिका छात्रावास में 23 हजार 100 बालिकाएं आवास की सुविधा के साथ स्कूल शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय- प्रदेश में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना का संचालन प्रदेश के उन क्षेत्रों में किया जा रहा है, जहां महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है। प्रदेश में संचालित 207 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में करीब 23 हजार 100 बालिकाएं अध्ययन कर रही हैं। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में छात्राओं को आवासीय सुविधा के साथ भोजन, स्पोर्टस, आत्मरक्षा, उपचारात्मक शिक्षा, कैरियर कांउसिल की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाओं को जीवन कौशल और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों को प्रभावी तरीकों से सक्षम करने के लिये आवश्यक प्रशिक्षण भी दिलाया जा रहा है।

छात्रावासों में आधुनिक सुविधाएं- कस्तूरबा गांधी बालक-बालिका छात्रावास में आईसीटी लेब और स्मार्ट क्लासरूम भी स्थापित किये गये हैं। छात्रावासों में सुरक्षा की दृष्टि से सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था भी की गई है। छात्रावास में भोजन व्यवस्था के लिये रोटी मेकर के साथ वॉशिंग मशीन एवं उच्च गुणवत्ता के मैट्रेस भी उपलब्ध कराए गए हैं। इन छात्रावासों में पुस्तकालय भी संचालित किये जा रहे हैं। बच्चों के समग्र विकास के लिये छात्रावास में रहने वाले बच्चों को समर कैम्प में विभिन्न रचनात्मक गतिविधियां कराये जाने की भी सुविधा दी गयी है।

कॉल डिटेल में मिले साक्ष्य, हरियाणा से ममेरा भाई पकड़ा

लापता बेटे का फोटो देखकर पल-पल रो रही मां, बोली-विश्वास है वापस लौटेगा

भोपाल। ग्वालियर के मुरार मोहनपुर गांव से लापता तीन साल के मासूम (रितेश पाल) को अब नौ दिन बीत गए हैं, लेकिन ग्वालियर के तेज तर्रार अफसरों की टीम अभी भी खाली हाथ है। इस दौरान पुलिस पर बच्चे की मां ने पीटने का भी आरोप लगाया है। पुलिस ने नौ दिन में बच्चे की तलाश में हर एंगल, संभावनाएं टटोली हैं, लेकिन यह नौ दिन मासूम की मां लिए बहुत कठिन रहे हैं। एक-एक पल साल की तरह बीच रहा है। मासूम की मां (सपना पाल) ने बताया कि नौ दिन से जिंदा लाश की तरह हूं। रितेश का फोटो देखकर रो लेती हूं, फिर खुद को संभालने का प्रयास करती हूं। नौ दिन बीत गए हैं। पुलिस महकमा के अफसरों की मानें तो हर दिन के साथ बच्चे की जान पर खतरा बढ़ता जा रहा है। मां को अभी भी विश्वास है कि उसका बच्चा सकुशल लौटेगा और उसकी गोद में खेलेगा।

पुलिस कहती है कहां है बच्चा बता दो- लापता मासूम की मां सपना पाल, मामी ज्योति पाल का कहना है कि नौ दिन हो गए हमारे बच्चे को गायब हुए। पुलिस प्रयास कर रही है, लेकिन पर हम पर भी दबाव बना रही है। दर्द उस समय होता है जब पुलिस की महिला अधिकारी लौट फिरकर हमारे घर पर आकर हमको धमकाती हैं कि बच्चा कहां छुपा रखा है बता दो।

500 पुलिसकर्मी दिन-रात कर रहे छानबीन

जिस स्पॉट से संदिग्ध हालात में बच्चा लापता हुआ है वहां से तीन दिशा में घना जंगल है और एक दिशा में 100 मीटर की दूरी पर बायपास है जो 200 मीटर दूर जाकर ग्वालियर-झांसी हाइवे पर मिल जाता है। तीन तरफ से रास्ता बंद होने पर स्पॉट तक किसी आमजन की आवाजाही नहीं होती है। लापता मासूम सिर्फ तीन साल का है इसलिए खुद से ज्यादा दूर नहीं जा सकता। यदि निकल जाए तो लौट नहीं पाएगा। पुलिस को आशंका है कि अपहरण हुआ है तो अपहरणकर्ता घर के पास ही घात लगाकर बैठा था। यदि यह हादसा है तो पुलिस जंगल में छानबीन कर रही है। पुलिस ने पांच सौ से ज्यादा जवान अफसर सर्चिंग में लगा रखे हैं।

सोनम-राज ने हवस के लिए राजा को मारा डाला

भाई विपिन रघुवंशी ने कहा-मर्डर का यही मोटिव

भोपाल। इंदौर के बहुचर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड को लेकर राजा के बड़े भाई विपिन को शिलॉन्ग कोर्ट में बयान के लिए बुलाया है। वे सोमवार सुबह फ्लाइट से इंदौर से रवाना हो गए हैं। रात तक शिलॉन्ग पहुंचेंगे। 11 नवंबर को विपिन के बयान होंगे। उन्हें शिलॉन्ग के थाना प्रभारी के माध्यम से वॉट्सऐप पर नोटिस भेजा गया था। शिलॉन्ग रवाना होने से पहले विपिन रघुवंशी ने बात की। उन्होंने कहा- मैंने ही राजा और सोनम के लापता होने की पुलिस में शिकायत की थी। अब किस विषय में बयान होना है, यह वहीं जाकर पता चलेगा। हमें मामले में कुछ और बातों की भी जानकारी मिली है, जिसकी पुष्टि वहीं होगी। विपिन का कहना है कि हमें अभी तक चार्जशीट नहीं मिली है, जिससे भाई के मर्डर का मोटिव पता नहीं चल सका है। जहां तक मुझे लग रहा है कि राज और सोनम ने अपनी हवस के लिए राजा की हत्या की। आमतौर पर लोग प्यार में कुर्बानी देते हैं, लेकिन इन्होंने हवस के लिए उसे मार दिया। बता दें, राजा रघुवंशी का 2 जून को शिलॉन्ग में शव मिला था। मामले में उसकी पत्नी सोनम समेत 5 आरोपी जेल में हैं। शिलॉन्ग पुलिस की एसआईटी 790 पेज की चार्जशीट भी कोर्ट में पेश कर चुकी है। 21 सितंबर को परिवार ने घर में ही राजा का जन्मदिन भी मनाया था। परिवार ने राजा की फोटो के सामने बर्थडे सॉन्ग गाया। मां ने राजा के फोटो की बलाएं भी ली थीं। इस दौरान राजा के दोनों भाई उनकी पत्नी, बच्चे और माता-पिता ने जरूरतमंदों को कंबल बांटे। हालांकि, परिवार ने दीपावली का त्योहार नहीं मनाया। इंदौर निवासी ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की सोनम से शादी इसी साल 11 मई को हुई थी। इसके बाद अपनी पत्नी सोनम रघुवंशी के साथ इसी साल 21 मई को हनीमून मनाने के लिए मेघालय के शिलॉन्ग गए थे। जहां वो 23 मई को हनीमून के दौरान लापता हो गए थे। 10 दिन बाद पुलिस ने 30 फीट गहरी खाई से राजा का क्षत-विक्षत शव बरामद किया, जिस पर धारदार हथियार से किए गए कई घाव थे। सोनम तब लापता थी। इसके बाद यूपी में उसने सरेंडर किया था। उससे पूछताछ के बाद आकाश, आनंद और विशाल को पकड़ा था। सोनम के राज कुशवाहा से प्रेम संबंध थे। हालांकि उसके परिवार ने इस बात से इनकार किया था। पत्नी सोनम राजा को दर्शनीय स्थलों की सैर के बहाने एक सुदूर स्थान पर बुलाकर ले गई थी। उनके पीछे अन्य तीनों हत्या के आरोपी भी चले गए थे। फिर दो छुरों से वार कर उसकी हत्या कर दी, जिनमें से एक छुरा बाद में जंगल से बरामद किया गया। सोनम घटनास्थल से भाग गई और बाद में उसने उत्तर प्रदेश में पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

भोपाल में मॉडल की संदिग्ध हालात में मौत

मुस्लिम बॉयफ्रेंड हॉस्पिटल में छोड़कर भाग निकला

● मां बोली-प्राइवेट पार्ट और बॉडी पर चोट के निशान

भोपाल। भोपाल में 27 साल की मॉडल की संदिग्ध हालात में मौत का मामला सामने आया है। बॉयफ्रेंड सोमवार तड़के इंदौर रोड भैंसाखेड़ी के एक अस्पताल में युवती को छोड़कर भाग गया। युवती की मौत की सूचना डॉक्टरों ने पुलिस को दी। पुलिस ने बॉडी को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। युवती के परिजन और मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में गांधी मेडिकल कॉलेज में पोस्टमॉर्ट्म कराया जा रहा है। मृतका के परिजन ने हत्या का आरोप लगाया है। युवती के प्राइवेट पार्ट सहित कंधे और चेहरे पर चोट के निशान मिले हैं। मॉडल खुशबू अहिरवार सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव थी। इंस्टाग्राम पर उसका 'डायमंड गर्ल' नाम से अकाउंट है, जिस पर 12 हजार फॉलोअर्स हैं। इस अकाउंट में खुशबू आए दिन मॉडलिंग से जुड़ी अपनी फोटोज शेयर करती थी।

बीए की पढ़ाई छोड़ी, मॉडलिंग करने लगी थी- हेड कॉन्स्टेबल प्रतीक कुमार ने बताया कि खुशबू अहिरवार उर्फ खुशी वर्मा (27) कासिम नाम के युवक के साथ लिव-इन-रिलेशन में रह रही थी। कासिम उसे अस्पताल में भर्ती कराने के बाद भाग गया। अस्पताल की सूचना पर मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक खुशबू बीए फर्स्ट ईयर के बाद पढ़ाई छोड़ चुकी थी। वह तीन साल से भोपाल में रह रही थी। यहां कई लोकल ब्रांड्स के लिए मॉडलिंग कर चुकी है। मां से हमेशा बहुत आगे जाने की बात करती थी। पार्ट टाइम जॉब कर अपना खर्च चलाती थी।

कासिम ने मां से कहा था-आपकी बेटी मेरे साथ

मृतका की मां लक्ष्मी अहिरवार ने बताया कि तीन दिन पहले कासिम ने कॉल किया था। उसने बताया था कि मैं मुसलमान हूं...लेकिन आपकी बेटी मेरे साथ है। आप फिक्र मत करो। मैं उसे साथ लेकर उज्जैन जा रहा हूं। बेटी ने भी बात कर बताया था कि आप फिक्र मत करो, कासिम अच्छा लड़का है, मैं उसके साथ हूं। आप परेशान मत होना। बाद में हमें पता लगा कि बेटी कासिम के साथ रिलेशन में थी। बेटी को वही चिरायु अस्पताल लेकर पहुंचा था। उसी ने बेटी का मर्डर किया है। मां ने कहा कि पुलिस बता रही है कि दोनों उज्जैन से भोपाल आ रहे थे। रास्ते में बेटी की तबीयत बिगड़ी तो कासिम ही उसे अस्पताल लेकर पहुंचा। बेटी को बेसुध देखने के बाद वह भाग गया। हमें इंसाफ चाहिए, बेटी की हत्या करने वाले को सख्त सजा मिलना चाहिए। मां लक्ष्मी अहिरवार ने कहा- उसकी बॉडी पर चोटों के निशान हैं। जगह-जगह नीले निशान पड़े हैं। चेहरे पर सूजन है। यहां तक की प्राइवेट पार्ट पर भी चोट के निशान हैं। निर्मम तरीके से पीट-पीटकर बेटी की हत्या की गई है। मां आशा ने बताया कि खुशबू दीपावली पर मंडीबामोरा स्थित घर आई थी। 3 नवंबर को घर से भोपाल आने का बोलकर निकली थी। यहां आने के बाद उसने अपनी बहन को प्रेमी के संबंध में कॉल पर बताया था। इससे पहले तक किसी को कासिम के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। हम बेटी को रोक-टोक भी नहीं कर सके, क्योंकि बीते तीन दिन से उसका कोई कॉल नहीं आया। कासिम का नंबर पर लगाने पर उसने कॉल पिक नहीं किया।

संपादकीय

व्यावहारिक सवाल फिर भी बाकी

सुप्रीम कोर्ट ने देश में आवारा कुत्तों की समस्या पर नियंत्रण को लेकर सरकारों को जो ताजा आदेश दिया है, वह ठीक तो है, लेकिन उसकी भी व्यावहारिकता पर उतना ही प्रश्नचिन्ह है, जितना पहले के समाधानों पर था। विगत 7 नवंबर को देश की सर्वोच्च अदालत ने अपने आदेश में शीर्ष अदालत ने राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों के अधिकारियों से कहा है कि सरकारी और निजी अस्पतालों, शैक्षणिक संस्थानों और रेलवे स्टेशन जैसी सार्वजनिक जगहों से आवारा कुत्तों को हटाया जाए। इसके बाद उनकी नसबंदी और टीकाकरण कराकर उन्हें शेल्टर होम में रखा जाए। इसके साथ ही कोर्ट ने हाईवे और एक्सप्रेसवे से आवारा जानवरों और मवेशियों को हटाने का भी आदेश दिया। कोर्ट ने यह भी साफ़ किया कि इन निर्देशों का सख्ती से पालन होना चाहिए। इसके लिए राज्यों को आठ हफ्तों का समय दिया है। गौरतलब है कि पिछले तीन महीनों में सुप्रीम कोर्ट ने आवारा कुत्तों से जुड़े मामलों में कई बार हस्तक्षेप किया है। इन आदेशों का विरोध भी हुआ, जिसके बाद कोर्ट को कुछ निर्देशों में संशोधन करना पड़ा। इसके पीछे कारण यह था कि आवारा कुत्तों से जुड़े कई मामले सुप्रीम कोर्ट और अलग-अलग हाई कोर्टों में लंबित थे। कोर्ट ने कहा था कि यदि कोई व्यक्ति कुत्तों के प्रबंधन में किसी तरह की बाधा डाले तो उसके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाए। साथ ही शेल्टर में रखे गए कुत्तों की उचित देखभाल और निगरानी सुनिश्चित की जाए। कोर्ट के इस फैसले का व्यापक विरोध हुआ। कहा गया कि शहरों में आवारा कुत्तों के लिए पर्याप्त शेल्टर ही नहीं हैं तो उन्हें कहां रखा जाएगा। इसके बाद मामला सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की बेंच को सौंपा गया। अब इस पीठ ने पूर्व के आदेश में संशोधन करते हुए नया आदेश दिया है कि नसबंदी और टीकाकरण के बाद कुत्तों को उसी इलाके में वापस छोड़ा जाएगा, जहाँ से उन्हें पकड़ा गया था. केवल रेबीज़ से संक्रमित कुत्तों को ही शेल्टर में रखा जाएगा। साथ ही, हर इलाके में कुत्तों को खाना देने के लिए निर्धारित स्थल तय करने को कहा गया। कोई व्यक्ति या संगठन कुत्ते को गोद लेना चाहे तो वह म्युनिसिपल अधिकारियों को आवेदन दे सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों से भी पूछा कि वो इस मामले में क्या कार्रवाई कर रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि देश में आवारा कुत्तों द्वारा लोगों को काटे जाने की समस्या बेहद गंभीर होती जा रही है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 2024 में पूरे देश में ऐसी 37 लाख घटनाएं हुईं। कोर्ट के आदेश के परिपालन में राज्यों व शासित प्रदेशों को दो हफ़्ते के अंदर ऐसे निजी और सरकारी अस्पताल, शैक्षणिक संस्था इत्यादि की सूची बनानी होगी। इन जगहों पर पर्याप्त बाउंड्री वॉल, फेंसिंग और गेट लगाने होंगे ताकि आवारा कुत्ते घुस ना सके। यह काम आठ हफ्तों के अंदर करना ही होगा। इन सभी अस्पतालों, खेल परिसरों, शैक्षणिक संस्थाओं को एक अधिकारी नामित करना होगा जो जगह की देख-रेख करे। स्थानीय नगरपालिका या पंचायत तीन महीने में एक बार इन जगहों का निरीक्षण करें। नगरपालिका अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि इन परिसरों में मौजूद आवारा कुत्तों को पकड़कर शेल्टर होम में रखा जाए, उनकी नसबंदी और टीकाकरण हो, और उन्हें दोबारा उन्हीं इलाकों में न छोड़ा जाए। कोर्ट ने सभी राज्यों से आठ हफ्तों के भीतर जवाब मांगा है कि वो इन निर्देशों को कैसे लागू कर रहे हैं। लेकिन सबसे बड़ा सवाल आवारा कुत्तों को कहां रखा जाएगा, इसका है। कुत्तों की नसबंदी में भी भारी फर्जीवाड़ा होता रहा है। इस पर काबू कैसे पाया जाएगा, इस पर भी विचार किया जाना चाहिए।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

शहरी संस्कृति में सहकारिता की खोज

दुनिया में शहरी क्षेत्र बढ़ रहे हैं। गाँवों का लोप हो रहा है। गाँव से इसलिए जो देसज व्यवस्थाएं थीं, वे भी शहरों में शिफ्ट हो रही हैं। गाँव और शहर के रिश्ते इसलिए अब आर्थिक सरोकारों से ज्यादा गहरे होंगे। सहकारिता के कार्यक्रम भी अब शहरी क्षेत्र में स्थापित व स्थान्नातरित होने की मांग कर रहे हैं। बहुत पहले से यह धारणा हमारे समाज में बनी हुई है कि राज्य नागरिकों के सभी उत्तरदायित्व लें क्योंकि वे कल्याणकारी राज्य होने का दावा करते हैं। पीटर डेविस ने सहकारी विकास और स्थानीय ग्रामीण व शहरी समुदाय विषय पर एक अध्ययन किया जिसका उद्देश्य था कि सहकारी समितियों के सामाजिक आधार को पुनः स्थापित करने हेतु एक निम्नतम स्तर की रणनीति क्या हो। इस अध्ययन में वह यह तर्क देते हैं कि अगर राज्य आपकी सभी ज़रूरतें पूरी करता है, तो परिवार और दोस्त किस काम के हैं? स्वयं सहायता सहकारी समितियाँ क्यों हैं? यूरोप के कई हिस्सों में, लोग यह समझने लगे हैं कि उन्हें जल्द ही स्वयं सहायता के सिद्धांतों को फिर से सीखना होगा। कमोवेश यह दुनिया के हर सहकारी सरोकारों में रुचि रखने वाले देशों को समझना होगा। यह समझना होगा कि सहकारी क्षेत्र की उपयोगिता व उपादेयता आखिर कैसे एक देश के लिए वरदान बन सकती है।

वस्तुतः सहकारी समितियाँ सामुदायिक सशक्तिकरण, सामाजिक सामंजस्य और सतत विकास को बढ़ावा देकर शहरी संस्कृति को महत्वपूर्ण रूप से आकार देती हैं। वे एक वैकल्पिक, जन-केंद्रित आर्थिक मॉडल प्रदान करती हैं। विशिष्ट शहरी आवश्यकताओं, जैसे कि किफायती आवास, उचित मूल्य वाली वस्तुओं तक पहुँच और वित्तीय सेवाओं, को संबोधित करती हैं। पारंपरिक व्यवसायों या राज्य संस्थानों द्वारा उपेक्षित हो रही चीजों के सहेजती हैं। इसीलिए शहरी संस्कृति में सहकारिता के महत्व को रेखांकित किया जाने जा रहा है और उस पर बहस हो रही है। पॉलिसीज तैयार हो रही हैं कि सहकारी समितियों के माध्यम से शहरी होती जनसँख्या के प्रश्नों को चिन्हित किया जाए और जीवन स्तर में सुधार किया जाए।

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता घोषित किया है। विश्व को पता है कि इसकी थीम सहकारिताएँ एक बेहतर विश्व का निर्माण करती हैं, रखा गया। एक बेहतर भविष्य के निर्माण की बात जब सोची गई तब यह विश्व को पता नहीं था कि संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष एनालेना बेयरबॉक होंगी और वह विश्व को अपने कार्यकाल के लिए थीम देंगी बेटर

टूगेदर। दोनों थीम लगभग एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। सहकारिताओं के बेहतर भविष्य के निर्माण की जहाँ सहकारिता आन्दोलन के माध्यम से बात हो रही है वहीँ महासभा के 80वें सत्राध्यक्ष की ओर से यह अपील की गयी है कि सभी एक साथ आएं। सभी एकजुट हों। इसका आशय है कि जब हमारे मन, कर्म और सहयोग के लिए एकजुटता बनेगी तभी यह विश्व पूर्णतया सुर्काहित, शांतिमय व रचनातमक दिशा में आगे बढ़ सकेगा। आज सहकारिता आन्दोलन के माध्यम से देश के गृह एवं सहकारिता मंत्री भी यही चाहते हैं कि सभी सहकारिता के साथ जुड़ें और सभी एकजुट होकर सहकारिता के लिए कार्य करें। जब वैश्विक विकास और सतत विकास लक्ष्यों-एसडीजी 2030 के संयुक्त राष्ट्र के एजेंडे को प्राप्त करने में सहकारिताओं द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिकाएं तय की जा रही हैं तो भी और देश को प्रगति पथ पर ले जाना है तो भी, हम यह महसूस कर रहे हैं और दुनिया के देश भी महसूस कर रहे हैं कि सभी एकात्मभाव से आगे बढ़ने का संकल्प लें।

नई दिल्ली में सहकारिता कुंभ 2025 हो रहा है। आर्थिक विकास, रोज़गार सृजन और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहकारी क्षेत्र के योगदान को उजागर करने की आज बारी है। भारत को यह तय करना होगा कि शहरी जनसँख्या को हम अपने आर्थिक सशक्तीकरण के लिए कैसे उपयोग कर सकते हैं। भारत को यह तय करना है कि हमारी शहरी सहकारी समितियां देश के विकास में अपनी भूमिकाओं को कैसे गंभीरता से तय करें और कम समय में देश हित के लिए आ सकें। अब तक हमारे देश में सहकारिता को केवल अपने आर्थिक स्वावलंबन के लिए उपयोगी माना जा रहा है। इससे बढ़कर कुछ अब सोचने की आवश्यकता है। शहरी क्षेत्र की सहकारी अभिरुचि लेने वालों को और विस्तार से सोचने व उद्दात्त चिंतन की आवश्यकता होगी। यह कैसे होगा, इस पर लोग विचार करेंगे लेकिन ऐसे मैसेज अब शहरी सहकारी समितियों के बीच प्रसारित हों जो लोगों में उद्दात्त होने की चेतना का विस्तार कर सकें। क्या सहकारी समितियां अब इतना हिम्मत जुटा सकती हैं कि वे सहकारी मामले की ऋण लेकर पर्यावरणीय मामले में इन्वेस्ट हेतु थोड़ा धन जुटाने की कोशिश करें? क्या ये सहकारी समितियां सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए अपने संयमित आर्थिक स्वावलंबन के बाद सहयोगी होने के लिए आगे आ सकती हैं? ऐसे विचारों को शहरी सहकारिता की संस्कृति बनाना आज आवश्यक है। भारत में ऐसी रिश्क लेने वाली सहकारी समितियां अगर बनती हैं तो आने वाले समय में भारत का यह मॉडल पूरी दुनिया के लिए मिसाल बन सकेगा।

हमें शहरी होने का दंभ भरने से ज्यादा आवश्यक है कि हम लोक कल्याण के लिए सेवक की भूमिका निभाने के लिए स्वयं को तैयार करें। बेटर टुगेदर की भावना के साथ निःसंदेह शहरी सहकारी समितियां ऐसे कार्य को करे सकती हैं और देश को ही नहीं दुनिया को संदेश दे सकती हैं कि हमारी चिंता केवल हम स्वयं नहीं है अपितु जल-जंगल-जमीन-जीवन से जुड़े मुद्दे और जीवन के उत्कृष्ट भविष्य भी हैं। अब तक ऋण लेकर घी पीने की कहावतें सुनी गयीं। अब बारी है सहहकारी समितियों द्वारा ऋण लेकर सामाजिक उन्नयन के लिए अवदान देने की भी। यद्यपि यह एक कठिन व्रत से संभव है। यह एक कठिन संकल्प का नतीजा होगा। लेकिन यह संभव है।

दिल्ली में दो दिन का विज्ञान भवन में हो रहे चिंतन-मनन में बहुत से विचार सामने आएंगे किन्तु शहरी संस्कृति में सहकारिता के ट्रांसफार्मेशन की जब कोशिश करने की बात आए तो कुछ इस प्रकार के भी इनिशिएटिव सामने आने चाहिए जिससे भारत की चिंताएं कम हों और देश के हर नागरिक अपने उत्तरदायित्व से भारत में आत्मविश्वास भर दें, ऐसी कोशिश करने वाले लोगों को भी आगे आना होगा। भारत के सहकारिता मंत्री अमित शाह ने जिस प्रकार सहकारिता आन्दोलन को अपने देशव्यापी उन्नति के विभिन्न उद्देश्यों में सम्मिलित किया है। एक विशिष्ट मुहिम बना दिया है, उसका असर तो भारत में दिखने लगा है। सहकारी क्षेत्र में विकास व विस्तार केवल आर्थिक समृद्धि के लिए नहीं हुआ है अपितु अकादमिक उन्नति व नवाचार की दिशा में हुआ है। देश में आने वाले समय में इससे बड़े पैमाने पर हमारा देश पॉलिसीज बना सकेगा और दुनिया में अपने सहकारिता मॉडल को स्थापित कर सकेगा। दिल्ली में आयोजित सम्मेलन उसी दिशा में कार्य-संस्कृति विकसित करने की एक कड़ी है। शहरी संस्कृति में सहकारिता के विविध आयामों को पंख लगे और देश में विकसित भारत निर्माण करने की आत्मशक्ति आए, यही अगर उद्देश्य पूर्ण होता है तो भारत को अपने भविष्य को स्वर्णिम भविष्य के रूप में रूपांतरित करने से कोई नहीं रोक सकेगा।

सत्ता संघर्ष

अजित लाड

(पत्रकार एवं विश्लेषक)

जनादेश पर अविश्वास, लोकतंत्र का वास्तविक संकट

भारतीय लोकतंत्र अपनी संरचना, गहराई और निरंतरता के कारण दुनिया के सबसे जीवंत और व्यापक लोकतंत्रों में गिना जाता है। यहाँ सत्ता परिवर्तन किसी उथल-पुथल, संघर्ष या हिंसा से नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित और संस्थागत चुनाव प्रक्रिया के माध्यम से होता है। भारत में आजादी के बाद से अब तक सैकड़ों चुनाव हुए हैं, कई बार सरकार बदली और अलग-अलग दलों ने जनता का विश्वास अर्जित किया। यह इस लोकतंत्र की परिपक्वता और जनता की राजनीतिक चेतना का प्रमाण है कि सत्ता का संक्रमण हमेशा शांतिपूर्ण और स्वीकार्य रूप से सम्पन्न हुआ है। हालाँकि, पिछले एक दशक में भारतीय राजनीति में एक नया विमर्श उभरकर आया है, चुनावी प्रक्रिया पर अविश्वास का। विशेष रूप से कांग्रेस पार्टी के भीतर और खासतौर पर राहुल गांधी के राजनीतिक वक्तव्यों में चुनावी परिणामों को तर्कसंगत विश्लेषण की बजाय प्रणालीगत दोषों से जोड़ने की प्रवृत्ति लगातार दिखाई दी।

यह आरोप सीधे तौर पर ईवीएम, चुनाव आयोग और कभी-कभी न्यायिक प्रक्रिया की निष्पक्षता तक पर सवाल खड़ा करते हैं। लेकिन, इस विमर्श का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह अविश्वास केवल उन परिस्थितियों में उभरता है जहां परिणाम अनुकूल नहीं होते। जहाँ जीत होती है, वहाँ प्रक्रिया पर पूरी चुप्पी रहती है। दरअसल, किसी भी राजनीतिक दल के लिए चुनाव में हार कोई असामान्य घटना नहीं है। यह लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा है। 1977 में इंदिरा गांधी को भारी हार का सामना करना पड़ा था, आपातकाल के खिलाफ जनता की प्रतिक्रिया थी। फिर 1980 में जनता ने उन्हें भारी बहुमत से वापस सत्ता में बैठाया। जनता के निर्णय समय, परिस्थितियों और मनोवैज्ञानिक परिवेश के अनुसार बदलते हैं। 1996-2009 के बीच देश ने गठबंधन राजनीति का लंबा दौर देखा, जहाँ जनादेश खंडित होते थे और सरकारें परामर्श, समर्थन और सहमति के आधार पर चलती थीं।

इस पृष्ठभूमि में 2014 से लगातार मिले बहुमत के जनादेश को केवल मशीन की तकनीक से जोड़ देना लोकतांत्रिक चेतना की समझ को सीमित करना है। यह सही है कि किसी भी चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी और विश्वसनीय होना चाहिए। लेकिन, यह भी तथ्य है कि भारत में ईवीएम का प्रयोग कोई नया प्रयोग नहीं है। इसे 1982 में केरल में पहली बार सीमित स्तर पर आजमाया गया था। 1998 के बाद से अनेक राज्यों में इसका उपयोग तेज़ी से बढ़ा। 2004 से लगभग पूरे देश में ईवीएम के माध्यम से लोकसभा चुनाव हो रहे हैं। इस अवधि में केंद्र और राज्यों में सत्ता कई बार बदली; यूपीए ने 2004 और 2009 के चुनाव भी इन्हीं मशीनों पर जीते। तब किसी दल ने ईवीएम की विश्वसनीयता पर सवाल नहीं उठाया। ऐसे में समस्या यहाँ राजनीतिक ईमानदारी से अधिक राजनीतिक सुविधा की है। जब परिणाम अनुकूल हों तो ईवीएम 'लोकतंत्र की आधुनिकता' का प्रतीक बन जाती है, और जब परिणाम प्रतिकूल हों तो वही ईवीएम लोकतंत्र के अपहरण का माध्यम कह दी जाती है।

यह द्वेष दृष्टिकोण केवल चुनावी बहस को दूषित नहीं करता, बल्कि जनता के निर्णय पर भी संदेह डालता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि जनता चुनाव केवल नारों, भाषणों या प्रचार अभियानों के आधार पर नहीं करती। भारतीय मतदाता का राजनीतिक विवेक बहुत गहरा है। वह अपने आर्थिक अनुभव, सामाजिक परिस्थिति, स्थानीय नेतृत्व, राष्ट्रीय परिदृश्य और भविष्य की स्थिरता को ध्यान में रखकर निर्णय लेता है। आज भारत में व्यापक स्तर पर एक ऐसी राजनीति उभरकर आई है, जिसमें नेतृत्व की दृढ़ता, राष्ट्रीय सुरक्षा, विकास की स्पष्ट योजनाएं और प्रशासन की निर्णायक क्षमता निर्णायक तत्व बन गए हैं। जनता इन तत्वों को देखकर वोट करती है, न कि केवल दल के इतिहास या प्रतीक के आधार पर। कांग्रेस की समस्या चुनावी मशीनों में नहीं, बल्कि अपने राजनीतिक संदेश और संगठनात्मक दिशा में है। 2014 के बाद से पार्टी ने हार की गंभीर समीक्षा नहीं की। न नेतृत्व की शैली पर आंतरिक विमर्श हुआ, न रणनीति में परिवर्तन आया। 10 साल में कांग्रेस का राजनीतिक आख्यान मुख्यतः आरोपों, विरोधों और आशंकाओं तक सीमित रहा।

जनता उस राजनीतिक शक्ति को महत्व देती है जो समाधान प्रस्तुत करे, विकल्प दे, दिशा सुझाए। केवल आरोपों के सहारे कोई राजनीतिक दल लंबे समय तक जनता का विश्वास अर्जित नहीं कर सकता। दूसरी ओर, भारतीय जनता पार्टी ने पिछले दशक में अपने राजनीतिक संदेश को अत्यंत स्पष्ट रखा–राष्ट्रीय पहचान, निर्णायक नेतृत्व, विकास मॉडल और कल्याणकारी योजनाओं की निरंतरता। चाहे कोई इसे स्वीकार करे या अस्वीकार, यह निर्विवाद है कि भाजपा का राजनीतिक प्रचार और जनसंपर्क अत्यंत सुसंगठित, स्थिर और एकरूप रहा है। इसके मुकाबले कांग्रेस की रणनीति अस्थिर, प्रतिक्रियात्मक और भावनात्मक प्रतीकवाद पर अधिक आधारित दिखती है। ऐसे में जो दल जनता की भाषा बोलना भूल जाता है, वह जनता का विश्वास खो देता है।

जो दल जनता के निर्णय पर संदेह करना शुरू कर देता है, वह लोकतंत्र से दूर चला जाता है, क्योंकि लोकतंत्र केवल सत्ता प्राप्ति का उपकरण नहीं है; यह जनता के निर्णय पर विश्वास करने की आंतरिक क्षमता का नाम है। जब पराजित पक्ष भी यह कह सके कि, 'जनता ने जो निर्णय दिया है, वह सर्वोच्च है; हम उससे सीखेंगे और लौटेंगे।' तभी लोकतंत्र स्वस्थ और जीवंत रहता है। आज भारत में वास्तविक संकट ईवीएम या चुनाव आयोग में नहीं, बल्कि राजनीतिक विश्वास में है। जनादेश को स्वीकारने की मानसिकता में है। जब तक हार को परिपक्वता से स्वीकारने की क्षमता नहीं आती, तब तक वापसी का मार्ग स्पष्ट नहीं हो सकता और ये बात सिर्फ़ कांग्रेस या राहुल गांधी पर नहीं सभी दल और उनके नेताओं पर लागू होती है।

सही अर्थों में बड़ा आदमी कौन?

वक्रोक्ति

डॉ. रूपेश मोदी

लेखक वरिष्ठ चिकित्सक हैं।

दुनिया में बहुतेरे बड़े लोग...कोई अपने आचरण के नैतिक जोर में...तो कोई अपनी कदगोई के छद्म शोर में। बात उस समय की है जब मुझे एक राष्ट्रीय महत्व के महत्वपूर्ण कार्यक्रम में शिरकत करने का अवसर मिला। वहां मैंने देखा कि हर व्यक्ति के चेहरे पर एक अलग किस्म की चमक-दमक थी। इस कार्यक्रम में हर वर्ग और क्लास के व्यक्ति आमंत्रित थे। वहां हर किसी के चेहरे पर एक अति-विशिष्टता का निज भाव था। हरेक अपने को किसी से कमतर नहीं आंक रहा था। ऐसा लगा जैसे यहाँ आमंत्रित सभी लोग बड़े गिरामी लोग हैं। और मन में यह भाव जागते ही मेरे चेहरे पर एक स्मित सी मुस्कान तरेर आई। तब कुछ दार्शनिक और कुछ व्यंग्यात्मक अंदाज़ में मुझे लगा कि यहाँ हर व्यक्ति तथाकथित रूप से 'बड़ा' है। बस फर्क इतना है कि कोई अपने कद से... तो कोई कुर्सी से। कोई अपने अहंकार से....तो कोई अपनी अच्छाई से। वैसे समझने के लिए हर व्यक्ति अपने मन का स्वयं-भू राजा होता है। और हर इंसान के भीतर एक छोटा-सा राजा भी रहता है... जो हर वक्त अपने मनवांछित राज्य की कल्पना में मद-मस्त रहता है। और यह 'राजा' अपने-आप को समझाता रहता है कि – 'मैं सबसे अलग हूँ... मैं सबसे बेहतर हूँ...मैं सबसे खास हूँ!'

दरअसल, यही मिथ्याभाव स्वयं-भू में 'बड़े होने' की जड़ भी है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह आत्म-सम्मान का थोथा प्रदर्शन भर है। मगर जब यह तथाकथित स्व-सम्मान 'आत्म-सम्मान' से बढ़कर 'आत्म-घमंड' में तब्दील हो जाता है, तब उससे ग्रसित व्यक्ति दूसरों को छोटा दिखाने की कला में 'पीएचडी' कर लेता है।

वस्तुतः यह इगो ही आदमी को छद्म रूप से दूसरों से 'बड़ा याने श्रेष्ठ' होने का मिथ्या अहसास जगाता है। आपने कभी ध्यान दिया है ? कोई भी सभा, मीटिंग या शादी-ब्याह में जाएँ, सबका पहला लक्ष्य होता 'बड़े से भी बड़ा' दिखने का थोथा प्रयास करते नज़र आना।

'अब कैसे पता चले कि मैं भी बड़ा आदमी हूँ?' दरअसल, कपड़ों से लेकर बातचीत तक सब-कुछ 'इम्प्रेशन मैनेजमेंट' का खेल है। आज की दुनिया में 'बड़ा आदमी' वह नहीं है जो समझदार है; बल्कि वह है जिसकी थोथी छद्मता की बात को बीच में काटने की हिम्मत किसी की न हो। दरअसल, हमारे समाज ने बड़प्पन को मापने के कई यांत्रिक पैमाने गढ़ रखे हैं; मसलन,

जिसके पास बड़ा बंगला है – वह बड़ा आदमी है !
जिसके पास बड़ा बैंक-बैलेंस है – वह बड़ा आदमी है !
जिसके पास बड़ा नाम, पदनाम है – वह बड़ा आदमी है !

पर जिसने अपने सद-आचरण से दूसरों का कल्याण किया वह अक्सर 'छोटा आदमी' कहला कर रह जाता है क्योंकि उसकी जेब और माली हैसियत अक्सर छोटी होती है। सच्चा बड़प्पन दरअसल उस मनो-स्थिति का नाम है, जहाँ व्यक्ति को अपनी ऊँचाई दूसरों की छाया में घटती हुई प्रतीत नहीं होती। बड़प्पन का असली मापदंड ऊँचाई नहीं बल्कि विनम्रता है।

लेकिन ऐसी सोच आज के 'आत्म सेल्फी युग' में दुर्लभतम गुण बन चुकी है – जैसेकि डायनासोर या सच्चा दोस्त। आजकल लोग अपनी बात में वजन डालने के लिए ऊँचे स्वर और ऊँची कुर्सी का सहारा लेते हैं। आप कभी गलती से भी किसी 'स्वयं-भू बड़े' की बात बीच में काट दीजिए!

तब वह मुस्कुराकर तपाक से कहेगा 'अरे बेटा, अभी तुम छोटे होज्एलिट माहौल समझ नहीं पाओगे!' वह मुद्दाम ही आपको बौना साबित कर देगा। और यही कुटिल मुस्कान उसके 'बड़प्पन' की सबसे ओछी मिसाल बन जाती है।

बड़ा वह नहीं होता है जो आपके सामने बैठा हो; बल्कि वह होता है जो अपने व्यवहार और आचरण से सामने वाले को भी बड़ा महसूस कराए। सच्चा बड़प्पन वह है जो दिखावे में नहीं, बल्कि व्यवहार की सादगी में झलकता है। वह व्यक्ति बड़ा है –

जो छोटे को छोटा महसूस न होने दे।
जो गलती पर डाँटने की बजाय उसे सुधारने का मौका दे।
और जो सफलता में भी सदैव विनम्र बना रहे।

वास्तव में जब किसी का 'आत्म-सम्मान' उसके 'आत्म-विश्वास' में बदलता है....तब वह व्यक्ति दूसरों को भी ऊँचाई प्रदान करता है।

और यही सच्चा बड़प्पन है – जो महसूस तो होता है, मगर दिखाई नहीं देता।

दुनिया में सचमुच सब बड़े लोग हैं –
कोई बड़ा सोच में है !
कोई बड़ा शोर में है।
और कोई बड़ा अपने अहंकार के खोखले जोर में है।
पर जो व्यक्ति दूसरों को ऊपर उठाता है –
वही सच्चे अर्थों में बड़ा और आदमकद होता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

ऋषभ जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ये न होता तो कोई दूसरा गम होना था

अजीब किस्म की दीवानगी मची हुई है देश में। जिसे देखो मरने के लिए मरा जा रहा है। बसों में आग लगने से, रेलगाड़ियों की भिड़ंत से, रेलगाड़ियों में लटकने और परिणामस्वरूप उनसे टपकने से, रेलगाड़ियों की पातों पर कट जाने से, हवाई-जहाजों के गिर जाने से, पहाड़ों के दरकने से, बादलों के फटने से, अतिवृष्टि के जलजले से, आर्तकियों की गोलियों से, सांडों द्वारा धोबी पछाड़ दिये जाने से, कुत्तों द्वारा दांत भर गड़ा देने से इत्यादि तरीकों से जिसे जहां जैसा मौका मिल रहा है वो वहीं निपट ले रहा है।

कुछ नहीं तो आपस में ही एक दूसरे से कुचले जाकर जान दे दे रहे हैं लोग। इस वाले तरीके का नाम भगदड़ रखा गया है। इस विकल्प के भी उपविकल्प बहुतायत से उपलब्ध हैं आजकल। भगवान जी के दर्शन की भीड़ में भगदड़, नेता-अभिनेता के दर्शन के कार्यक्रम में भगदड़, पसंदीदा क्रिकेट टीम के दर्शन के नाम पर भगदड़ इत्यादि अनेकानेक अवसरों में लाभार्थी इच्छानुसार चयन कर सकते हैं। इष्ट के दर्शन की अभिलाषा लिए प्राण त्यागे जायें तो सद्गति मिलती है वाला सिद्धांत हो सकता है इसके पीछे।

जिन्हें कोई मौका नसीब नहीं हो रहा वे बैठे-बिठाए हृदयगति ही रोक ले रहे हैं। इसका भी विचार नहीं कर रहे कि यह तरीका उतनी अल्पवय वालों के लिये है भी नहीं। सोचने वाले दिमाग लगाते रहें कि अगला अचानक कैसे चल दिया। कोरोना में शरीर कमजोर हो गया था या वेक्सीन नुकसान कर गयी थी या जाने क्यों। चलन ऐसा चल रहा है कि मरीज को उम्र लांग करने अस्पताल पहुंचा दिया जाये तो आईसीयू में सर्किट शार्ट का कारण बताकर प्राण छोड़ देता है वो। जान तजने के अंधानुकरण में मतवाले जन न तो देश की साख की फ़िक्र कर रहे न अपने नाते-रिश्तेदारों की।

बड़े लोगों की देखा-देखी यह प्रवृत्ति शिशुओं तक आ पहुंची है। उन बेचारों को ज्यादा दुनियादारी आती नहीं, सो कफ सीरप पीकर ही निकल ले रहे हैं। अब बालकों को यह कौन समझाए कि दवायें जान बचाने के लिए होती हैं न कि जान देने के लिए। और ये भी कि बेटा तुम्हारी जान बेशकीमती है मां-बाप के लिए। कोई कह रहा था कि मां-बाप ही तो पिलाते होंगे सीरप। उतना सा बालक खुद तो क्या ही पियेगा। ये बात भी सच है। मां-बाप कहते हैं गांव में डाक्टर थे नहीं या थे तो नंबर नहीं लगा क्योंकि भीड़ बहुत थी। यह बहुत गलत बात है। भाई बच्चा पैदा किया है तो बच्चों के डाक्टर से सेटिंग भी रखनी चाहिए। ये क्या बात हुई कि खुद ही दुकान से खरीद लाये। दवा दुकानदार बेचारे फालतू बदनाम हैं। बच्चा खांस रहा मां-बाप का, इलाज के लिए नहीं मिल रहे डॉक्टर लेकिन गलत है दुकानदार। आदमी की जान के विरुद्ध बैक्टीरिया के मजबूत होने का इल्ज़ाम भी इनके सर आता है। कहा जाता है, बिना डॉक्टर की पर्ची के दवाई दी इसलिए प्रतिरोधक क्षमता बढ़ गयी विषाणु की। देखिए भाई व्यापारी आदमी का काम है समता से सामान बेचना और लाभ कमाना। आदमी की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला च्यवनप्राश भी बेचता है वो। फिर बिना प्रिस्क्रिप्शन न देने के नियम तो पचास दवाओं के साथ हैं। सरकार को बताना चाहिए कि किसके लिए कड़ाई से पालन करना है और किसके लिए ढील रखी जा सकती है। मां-बाप का एक रोना ये भी है कि तकलीफ देखी नहीं जाती बालक की। अरे खांस ही तो रहा था। खांसने देते। ज्यादा से ज्यादा वही होता जो सीरप पिलाकर हुआ। यों तो डॉक्टर को दिखाकर भी वही होना था। वह भी सीरप ही लिखता। कोई कह रहा था कि सीरप निर्माता ने कोई सा हानिकारक कैमिकल ज्यादा मिला दिया। उसने भी सोचा होगा कि जो इंसान कीटनाशक मिले पानी, माइक्रोप्लास्टिक युक्त अनाज, चार सौ एक्यूआई वाली हवा भरपेट गटक कर जिंदा बना रहता है उसका पांच एम एल दवा से क्या ही बिगड़ जायेगा। उसे क्या पता था कि दो साल में शिशु रम नहीं पाया होगा इस गोले की व्यवस्था से। वैसे रम भी गया होता तो कोई और तरीका पकड़ लेता। ये न होता तो कोई दूसरा गम होना था। भाईसाहब गड़बड़झाला दरअसल गोले की व्यवस्था में है। जाने क्यों हर कोई निकल लेने को उतावला हो रहा है।

इतने भारी विषय पर कलम चलाते मुझे तो बुखार जैसा लगने लगा। दवा वाले से एजीथ्रोमाइसिन और पैरासीटामोल लेकर आता हूं। देखना दो गोलियां खाकर ठीक लगने लगेगा। छोड़ो न यार। इतना ज्ञानवर्धक लेख लिखा हमने। साधुवाद बोलना तो छोड़ो आप तो हमें ही प्रिस्क्रिप्शन वगैरह न जाने क्या-क्या ज्ञान देने लगे? अब इतना डॉक्टर तो हर कोई है इस देश में। फिर बेचने वाला तैयार, खरीदने वाला तैयार तो आपको क्या? अपन चले।

... और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

क्या नाम सिर्फ पहचान के लिये होता है?

अरे ओ रामू, श्यामू, छोटू, गुड्डू, बबलू, मुन्ना, पप्पू पुकारने के प्यार भरे नाम जिसे मुँह में मिश्री भरके माँ बाप पुकारते हैं। अगर वो वेटर या हेल्पर हो तो छोटू, श्यामू, रामू थोड़े हिकारत से पुकारे जाते हैं केवल पुरूषों के नामों का ही ज़िक्र क्यों कर रही हूँ, गुड़डी पप्पी, पिंकी, बबली, मुन्नी भी हैं। पर क्या आपने ध्यान दिया सबके पुकारने की एक ध्वनि होती है इसमें हम बाद में ज़िक्र करेंगे। हमारे जमाने में पंडित आता था लड़कों के नामकरण के लिये। ज़ाहिर सी बात है क्योंकि मृत्यु तक माता पिता इसी नाम को पुकारते हैं तो शास्त्रों अनुसार उसका नाम उसके हाव भाव, पुकारने पर दिल का सुकून रखने वाला होना चाहिये। मैंने पंडित जी से पूछा, आप लोग राशि का नाम ना रखने पर जोर देते हैं फिर राशि का नाम निकाला ही क्यों जाये और आप शब्द भी देते हैं वो किस आधार पर? पंडित जी ने कहा राशि का नाम सुरक्षित रखा जाता है उसे विवाह के समय कुंडली मिलान के समय उपयोग किया जाता है। उस नाम से बच्चे का आचरण व्यवहार निर्धारित होता है जो हम पुकारते हैं सो जन्म तिथि समय से राशि निकाल हम आप को कुछ अक्षर देते हैं जो बच्चे के लिये शुभ होते हैं। (पंडित देवदत्त)

हमारे जमाने में माता पिता, दादी बाबा नाम रखते थे। आजकल की पीढ़ी के माँ बाप स्वयं नाम रखना पसंद करते हैं। कुछ ऐसे हैं जो चाहते हैं पति पत्नी का नाम जोड़ के बच्चे का नाम रखा जाये जैसे विराट कोहली की बच्ची के नाम में ''का'' अनुष्का का ''व'' विराट का ''वामिका''। कुछ नौजवान पीढ़ी अर्थहीन और क्लिष्ट नाम रखके बहुत खुश और गौरवान्वित होती है फिर चाहे बच्चा और उसके दोस्त उसे बोल भी ना पाये जैसे यष्मित (लोकप्रिय केमस), अद्विक (बेजोड़), अद्यांत (अनंत)। अब देखिये मेरा बेटा पैदा हुआ मंद-मंद मुस्कुरा रहा था दादाजी की गोद में सो उन्होंने 'राम रक्षा स्त्रोत' से उसका नाम 'मधुर' रखा। मैं माँ हूँ इसलिये नहीं वो कम हंसता है पर बड़ी मधुर हंसी है उसकी। एक बात कहना भूल गई। आजकल आप कितने भी शास्त्रों, संस्कृत डिक्शनरी, विष्णु सहस्त्रनाम से बच्चे का नाम रख लें, 'हर बच्चे को विदेश जाना है और यूं हमारा 'मधुर' अब 'मैडी' हो गया।

चलिये हम कुछ और रिसर्च करें और जाने नाम क्यों महत्वपूर्ण है। पहली बात मैंने शास्त्रों से यही जानी कि ध्वनि का शब्दों का अनोखा मेल है पुकारने पर नाम कर्णप्रिय होना चाहिये।

एक प्रथा लड़कियों के लिये ये भी है कि लड़कियों के नाम विवाह से पहले सौंदर्य को लेकर रखे जाते हैं, गौरी, नेहा, जूही, सुलक्षणा, सुनयना भले ही श्यामा खूब गौरी हो और उज्जवला बेहद श्यामरंग नाम हमें समाज में विशिष्ट बनाता है नाम ना हो तो हमारी पहचान क्या (एक सवाल का जवाब किसी के पास नहीं ''क्यों नायक साहब की बेटी हो ना तभी कानून पे बातें करती हो से

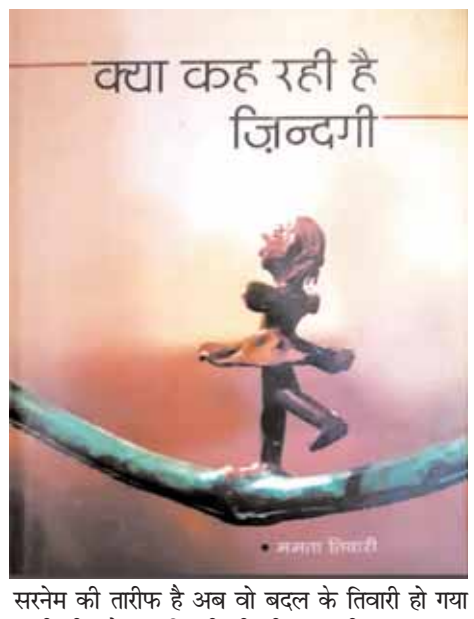

सरनेम की तारीफ है अब वो बदल के तिवारी हो गया अभी भी अरे वाह तिवारी जी की बहू तभी इतना अच्छा लिखती हो पर सरनेम लड़कियों के विवाह उपरांत बदल दिये जाते हैं पंडित जी कहते हैं सरनेम का पूरा शास्त्र है किसका सरनेम क्या महत्व रखता है बाद में चर्चा करेंगे) अब लड़की ससुराल आती है तो उसका नाम बदलने की प्रथा है पर आजकल विदेश जाने की इच्छा के कारण, कागज़ों पे उनका पुराना नाम सरनेम चलता है और नेमप्लेट पे हमारी ''राधिका पांडे अय्यर'' है एक नई प्रथा चली है हमारे यहाँ संबोधन भी महत्व रखते हैं पर आजकल विदेशों की तरह नाम पर जोर दिया जाता है ऑफिस में बॉस भी चाहता है सब उसे नाम से पुकारें। इजराइल के पास एक छोटे से गांव में प्रथा है बच्चे अपने माँ बाप को नाम से पुकारते हैं। पतियों को भी ऐ जी ओ जी से पुकारना बंद है हालांकि हमारे समय में जब पापा माँ को सुनती हो कहते थे बड़ा रोमांचक लगता था यानि संयुक्त परिवार के चलते अपनी पत्नी का नाम भी नहीं लिया जाता एक दिन हमारे 90 वर्षीय बाबा ससुर ने ''इनको'' बुला के डांटा क्या बच्चों की तरह पत्नी को पुकारते हो आप इन्हें श्रीमती जी कहे और आप इन्हें श्रीमान जी कहें और ये खेल बाबाजी के रहते खूब चला।

नाम हमारे व्यक्तिगत डीएनए का हिस्सा हो जाता है अवचेतन मन, मस्तिष्क उसी नाम की सुनता है अगर कोई सामने वाला आप का नाम संबोधित करके बात कहता है तो अव चेतन मन तुरंत काम पर लग जाता है उस दिशा में काम करने के लिये।

मानसिक शांति के लिये हमारे शास्त्रों में नाम जप (जैसा कि मंत्रों का जाप) ओम नाम का उच्चारण मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन लाने में मदद करती है इस बात को वैज्ञानिक तरीके से न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वेता अडातिया जो दुबई में लिमिटलेस ब्रेन लेब चलाती है इससे पूर्णतः सहमत है मंत्र जाप करते मस्तिष्क का उन्होंने ब्रेन स्केन भी किया है। कुछ लोग लेखन के समय उपनाम जिसे तखल्लुस भी कहते हैं उसे भी बहुत सोच समझ के रखना चाहिये। अब बताइये 'संपूर्ण सिंह कालरा' उतना प्रसिद्ध होता जितना 'गुलज़ार'। फिल्मों में नाम बदलने की प्रथा सालों से चली आई है लोग हीरो फिल्मों के नाम स्पेलिंग बदल देते हैं। कई पेशेवर बिजनेस मैन भी अपने नाम में परिवर्तन लाते हैं करण जौहर दो ज्ञ का इस्तेमाल करते हैं।

भगवान बुद्ध की एक कथा है जिसमें एक भिक्षु का नाम पापक था सब उसे उसी नाम से पुकारते है उसे शर्मिंदगी होती है वो बौद्ध के पास जाता है कि मेरा नाम बदल दो बौद्ध कहते है तुम पिछले जनम में भी सुंदर नाम ढूंढ रहे थे गुण सुंदर नहीं। वो उसी को सुंदर नाम ढूंढने को कहते है वो नगर में जाता है वहां एक व्यक्ति मर गया था सब रो रहे थे उसने पूछा इसका नाम क्या है उसने कहा 'जीवक' उसने सोचा 'जीवक' (खूब समय तक जीवित रहने वाला) इतनी जल्दी मर गया। फिर वो आगे बढ गया एक मकान मालिक एक स्त्री को मार रहा था कि वो किराया नहीं देती ये पूछता कि इसका क्या नाम है उसने कहा धनपाली (धनी) वो बोलता है नाम पहचान के लिये होता है ये तो कंगाल है उसे एक आदमी मिलता है जो रास्ता भटक गया था पापक ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है उसने कहा पंथक (रास्ता जाने वाला) पापक अब समझ गया था नाम सिर्फ पहचान के लिये होता है।

सबके अपने अपने तर्क होंगे मेरे पास और भी बातें है आपको इतने उदाहरण इसलिये बताये कि आप खुद निर्णय ले क्या सही है और मुझे भी बतायें और एक-दूसरे का नाम लेकर पूछे और क्या कह रही है जिंदगी?

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

विचारों की पाठशाला में मौलाना आजाद का भारत

भारतीय शिक्षा जगत के लिए 11 नवम्बर का दिन अत्यंत गौरवपूर्ण है। इस दिन को पूरे देश में 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के रूप में मनाया जाता है, जो स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री, महान स्वतंत्रता सेनानी, विद्वान, साहित्यकार, विचारक और भारतीय शिक्षा के आधारशिला-निर्माता मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती के उपलक्ष्य में समर्पित है। 2008 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इस दिन को आधिकारिक रूप से 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' घोषित किया था। यह केवल एक स्मृति दिवस नहीं बल्कि उस दृष्टि का उत्सव है, जिसने स्वतंत्र भारत को शिक्षित, प्रबुद्ध और प्रगतिशील बनाने की दिशा दी। मौलाना अबुल कलाम आजाद उन विरले व्यक्तित्वों में से थे, जिन्होंने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में अपनी कलम और वाणी से योगदान दिया बल्कि आजादी के बाद राष्ट्र के बौद्धिक और नैतिक उत्थान की दिशा भी तय की। वे मानते थे कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि आत्मा को स्वतंत्र करने और समाज को जागृत करने का साधन है। उनका यह विश्वास था कि कोई भी राष्ट्र तब तक महान नहीं बन सकता, जब तक उसके नागरिक शिक्षित और सुसंस्कृत न हों। आजाद का शिक्षा दर्शन भारतीय परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अद्भुत समन्वय था। उन्होंने शिक्षा को समानता, एकता और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधारस्तंभ माना।

स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री के रूप में मौलाना आजाद का योगदान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे यह भली-भांति समझते थे कि शताब्दियों की दासता ने भारत की आत्मा को कुंठित कर दिया है और इस कुंठा को केवल शिक्षा ही दूर कर सकती है। इसी दृष्टि से उन्होंने सर्वजन शिक्षा की अवधारणा को नीतिगत रूप दिया। उन्होंने कहा था, 'एक राष्ट्र, जो अपने प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षित नहीं कर सकता, वह अपनी भविष्य की नींव कमजोर बना रहा है।' आज जब हम 'सबके लिए शिक्षा', 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' या 'शिक्षा का अधिकार' की बात करते हैं तो उसकी जड़ें मौलाना आजाद की दूरदर्शी नीतियों में गहराई तक बसी हैं। मौलाना आजाद के कार्यकाल में शिक्षा मंत्रालय ने जो आधारभूत ढ़ांचा तैयार किया, वही आगे चलकर आधुनिक भारत की ज्ञान-व्यवस्था का मेरुदंड बना। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य और निःशुल्क करने पर बल दिया। उन्होंने माध्यमिक और उच्च शिक्षा में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को आवश्यक बताया। विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों और अनुसंधान केंद्रों की स्थापना उनके स्वप्न का ही विस्तार था। भारत में आज जो अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) जैसे प्रतिष्ठान हैं, उनकी नींव मौलाना आजाद की कल्पना और नेतृत्व में पड़ी। उन्होंने 1948 में भारतीय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन आयोग) की स्थापना की, जिसने उच्च शिक्षा के उद्देश्यों और दिशा को स्पष्ट किया। मौलाना आजाद के विचार केवल संस्थान निर्माण तक सीमित नहीं थे बल्कि शिक्षा की आत्मा को लेकर भी अत्यंत व्यापक थे। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति नहीं बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास है। उन्होंने धार्मिक और नैतिक शिक्षा के बीच संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि शिक्षा का प्रयोजन व्यक्ति को सत्य,

करुणा और सहिष्णुता के मार्ग पर अग्रसर करना है।

मौलाना आजाद बहुभाषी शिक्षा के पक्षधर थे और मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा के महत्व को समझते थे। उनका यह विचार आज भी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रतिध्वनित होता है, जहां मातृभाषा को प्राथमिक शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है। उनकी दृष्टि केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं थी, वे व्यस्क शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और महिला शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि कोई भी समाज तब तक प्रगतिशील नहीं बन सकता, जब तक महिलाएं शिक्षा से वंचित रहें। उन्होंने शिक्षा में समान अवसर की अवधारणा प्रस्तुत की, जिससे समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों को भी मुख्यधारा में लाया जा सके। उनके अनुसार, 'शिक्षा का प्रकाश तभी सार्थक है, जब वह सबसे अंधेरे कोनों तक पहुंचे।' उनकी नीतियों का एक और उल्लेखनीय पहलू था, शिक्षा का राष्ट्र निर्माण में उपयोग। वे शिक्षा को केवल व्यक्ति की उन्नति नहीं बल्कि सामूहिक चेतना के निर्माण का साधन मानते थे। उनके अनुसार, भारत की आत्मा उसकी सांस्कृतिक विविधता और आध्यात्मिक एकता में बसती है और शिक्षा ही वह माध्यम है, जो इस विविधता में एकता का बोध करा सकती है। इसीलिए उन्होंने शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शन को प्रमुख स्थान देने की आवश्यकता बताई।

आज जब हम 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' मनाते हैं तो यह आत्ममंथन का अवसर भी होता है। हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि क्या हम मौलाना आजाद के स्वप्न के अनुरूप एक शिक्षित, समान और जागरूक समाज बना पाए हैं? स्वतंत्रता के 78 वर्षों बाद भी हमारे देश में अशिक्षा, विद्यालय छोड़ने की दर और शिक्षा की गुणवत्ता जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि ग्रामीण भारत में अभी भी लाखों बच्चे प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं और उच्च शिक्षा में नामांकन दर विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। शिक्षा में असमानता, डिजिटल अंतराल और कौशल की कमी आज हमारे विकास पथ में बड़ी बाधा बनकर उभरी हैं। मौलाना आजाद का सपना केवल विद्यालयों की दीवारों तक सीमित नहीं था बल्कि वे एक ऐसे भारत की कल्पना करते थे, जहां शिक्षा व्यक्ति को सोचने, प्रश्न करने और सृजन करने की स्वतंत्रता दे। वे कहते थे, 'हमारी आजादी तभी सार्थक होगी, जब हर व्यक्ति ज्ञान और विवेक के प्रकाश से प्रकाशित होगा।' यही वह विचार है, जो आज भी शिक्षा के हर सुधार, हर नीति और हर अभियान की आत्मा है।

शिक्षा का लोकतंत्रीकरण तभी संभव है, जब समाज स्वयं आगे बढ़े, जब शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, मार्गदर्शक बनें, जब विद्यार्थी केवल अंक पाने की दौड़ में नहीं बल्कि जीवन को समझने की यात्रा पर निकलें और जब शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण बने। भारत आज 'ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था' की ओर अग्रसर है। डिजिटल युग ने शिक्षा को नई परिभाषा दी है लेकिन साथ ही नई चुनौतियां भी खड़ी की हैं। मौलाना आजाद की शिक्षा-दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है क्योंकि उन्होंने जिस शिक्षा की परिकल्पना की थी, वह केवल तकनीकी दक्षता नहीं बल्कि मानवीय संवेदनशीलता, बौद्धिक स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय पर आधारित थी। मौलाना आजाद का नाम भारत के इतिहास में न केवल स्वतंत्रता संग्राम के महानायक के रूप में दर्ज है बल्कि उस महान शिक्षाविद् के रूप में भी, जिसने भारत के भविष्य की दिशा तय की। उन्होंने जो बीज 1947 के बाद बोया था, वही आज विकसित होते भारत का ज्ञान-वृक्ष बनकर फैल रहा है। शिक्षा केवल ज्ञान की प्रक्रिया नहीं बल्कि मानवता की पुनःस्थापना का प्रयास है और जब तक भारत में शिक्षा का दीपक जलता रहेगा, तब तक मौलाना आजाद की आत्मा राष्ट्र की प्रगति में आलोक बनकर विद्यमान रहेगी।

जयंती पर विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र,कोलकाता

साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक मौलाना आजाद

मौलाना आज़ाद द्वारा कुरआन पर लिखी गई टीका को अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक माना जाता है जो कुरआन से उनके लगाव को दर्शाती है। आज़ाद नास्तिकता के एक लंबे दौर से भी गुजरे थे। अविश्वास के लंबे दौर के बाद नई चमक के साथ आस्था ने आज़ाद के मन में प्रवेश किया लेकिन संशय ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। आज़ाद ने तार्किकता पर लगातार जोर दिया,जिसके बारे में वह मानते थे कि ईश्वर ने इंसान को यह बेशकीमती तोहफा दिया ही इसलिए है कि वह इस सृष्टि का सबसे बेहतरीन प्राणी बन सके। मानवता को अगर एक साथ लाना है तो यह आपसी समझ की बुनियाद पर ही मुमकिन है, खासतौर पर बुनियादी आस्था के मामलों में। परम सत्य के स्वरूप की दार्शनिक समझ और मज़हब, कौम और राष्ट्रीयता का फर्क किए बिना प्रेम के मार्ग पर चलना,कुरआन की बुनियादी सीख यही है। पारंपरिक इस्लामिक ग्रंथों के अध्येता होने के साथ वे ज्ञान के दूसरे रूपों के अध्ययन में भी गहरी रुचि रखते थे। वे ऐसे पश्चिमी ज्ञान और मूल्यों का स्वागत करते थे जो इस्लाम की नैतिक शिक्षाओं के अनुरूप लगते थे। वे बौद्धिक रूप से खुद को मध्ययुगीन भारतीय विद्वान शेख अहमद सरहिंदी का अनुयायी मानते थे। मौलाना आजाद ने अपने लेखन में सर सैयद अहमद खां की भी काफी तारीफ़ की है लेकिन वे उनके द्वारा अपनायी गई अंग्रेजी-निष्ठा के आलोचक भी थे। 1912 में मौलाना आज़ाद ने एक साप्ताहिक पत्रिका अल-हिलाल का प्रकाशन प्रारंभ किया। जो मुस्लिम पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। अल-हिलाल पत्रिका मौलाना आजाद की इस्लाम की समझ और उनकी साम्राज्यवाद-विरोध भावनाओं का दर्पण बन गई। पत्रिका के प्रकाशन के लिए उन्होंने सीमित संसाधनों का इस्तेमाल किया और पूंजी के लिए विज्ञापनों का सहारा भी नहीं लिया। बिना किसी सरकारी मदद के स्वतंत्र रूप से पत्रिका के प्रकाशन को राजद्रोह की श्रेणी में रखा गया। कई बार पत्रिका पर जुर्माना लगा, हमला किया गया। बढ़ते हमलों के कारण मौलाना ने पत्रिका का प्रकाशन बंद कर दिया। इसके बाद 12 नवंबर 1915 में उन्होंने अल-बग़ल नाम से नई पत्रिका प्रकाशित करनी शुरू की। इन पत्रिकाओं व अपनी अन्य गतिविधियों के माध्यम से वे मुसलमानों में एक ऐसी धार्मिक भावना जगाना चाहते थे जिससे वे खुद को भारतीय राष्ट्रवाद से जोड़ सकें। मौलाना चाहते थे कि मुसलमान अधिक से अधिक संख्या में देश के स्वाधीनता आंदोलन में शामिल हों। 13 मार्च 1916 में अंग्रेजों ने उनकी प्रेस को बंद करवा दिया और उन्हें कैद कर रांची के पास आदिवासियों के एक छोटे से गांव मूराबादी में तीन साल से अधिक समय तक नजरबंद रखा गया। इस दौरान उपनिवेशवाद के खिलाफ उनकी भावनाएं और प्रबल हुई। इसी दौरान महात्मा गांधी के द्वारा चंपारण और खेड़ा में जन-आंदोलन हो चुके थे तथा इसके पूर्व बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट भी होम रूल लीग के लिए आंदोलन कर चुके थे। रॉलेट एक्ट के खिलाफ पूरे देश में जन-आक्रोश अपने चरम पर था। जिसका प्रतिकार करने के लिए जनरल डायर ने जलियांवाला बाग में मासूम और निहत्थे लोगों का कत्लेआम किया। उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को और अधिक मजबूत बनाने के लिए महात्मा गांधी ने खिलाफत आंदोलन को अपना समर्थन दिया था। 27 दिसंबर 1919 को आज़ाद को रिहा कर दिया गया लेकिन वे जनवरी 1920 की शुरुआत तक रांची में ही रहे। रिहाई के बाद मौलाना आजाद को यह तय करना था कि उन्हें एकांत में रहकर पढ़ना-लिखना चाहिए या साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन में शामिल होकर अपना योगदान देना चाहिए। मौलाना आजाद लिखते हैं कि यह ख़्वाहिश और इरादे के तालमेल का तेज आवेग था,ऐसा आवेग जिसमें मैं कोई आसमानी आवाज सुन पाता था और जो मुझसे कहती थी कि इंसान को अपनी ख़्वाहिश के बजाय खुदा की मर्जी को तरजीह देनी चाहिए। 18 जनवरी 1920 में आजाद पहली बार महात्मा गांधी से मिले। इस मुलाकात का प्रभाव दोनों ही नेताओं पर पड़ा। आज़ाद ने ख़िलाफ़त आंदोलन के जरिये स्वतंत्रता संग्राम में प्रवेश किया और जन-आंदोलनों से भी जुड़ गए। फरवरी 1920 कलकत्ता में उन्होंने खिलाफत कमेटी की बैठक की अध्यक्षता की,जहां उन्होंने असहयोग पर अपने विचार प्रस्तुत किए,जिसे ऑल-इंडिया खिलाफत कमेटी ने कांग्रेस से चार माह पूर्व ही अपना लिया था। आज़ाद ने सबसे पहले असहयोग आंदोलन और ख़िलाफ़त आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के साथ काम किया। आज़ाद, मुसलमानों और गांधी के बीच जुड़ाव की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गए, क्योंकि वे मुसलमानों के बीच अहिंसक राजनीतिक गतिविधियों का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में मुसलमान समुदाय की एकता और भागीदारी के लिए एक इस्लामिक कार्यक्रम पेश करने की कोशिश की जिस पर जमाल अल-दीन अफगानी और शिबली नोमानी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव था। इन दोनों से काफ़ी प्रभावित मौलाना आज़ाद ने इस्लाम के संदर्भ में भारतीय राजनीति का विश्लेषण किया। 1921 में मौलाना आजाद ने घोषणा की, कि 'समय की मांग है कि भारत में रहने वाले सात

करोड़ मुसलमानों को बाईस करोड़ हिंदुओं के साथ ऐसे गहरे रिश्ते बनाने चाहिए,भाईचारे की ऐसी भावना विकसित करनी चाहिए कि उन्हें एक ही राष्ट्र और देश समझा जाए, एकजुट और मुकम्मल वजूद के अविभाज्य हिस्से के तौर पर पहचाना जाए'। वे चाहते थे कि हिंदू और मुसलमान एक हमनस्ल जमात का हिस्सा बनें,जिसे उन्होंने उम्मत-ए-वहीदा एक राष्ट्र कहा। मौलाना आज़ाद 1923 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे युवा अध्यक्ष बने। 15 दिसंबर 1923 को दिल्ली में आयोजित कांग्रेस के विशेष सत्र की अध्यक्षता मौलाना आजाद ने की और विधान परिषद में शामिल होने के मुद्दे को लेकर बने गुट 'नो - चेंजर्स' और 'प्रो-चेंजर्स' के बीच समझौता करवाने का सफल कार्य भी किया। जिससे पार्टी का विभाजन टल गया। इसके बाद 1940 व 1946 में भी वे कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहे। 1941 में महादेव देसाई ने मौलाना आजाद पर एक किताब 'मौलाना अबुल कलाम आजाद : द प्रेसिडेंट ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस, अ बायोग्राफिकल मेमॉयर' लिखी जिसमें 1940 में कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में उनके चुनाव को सही ठहराने के लिए उनके खानदान के शज़रे और सियासी जिंदगी पर गहन अध्ययन किया गया है। महात्मा गांधी ने आजाद को अपना समर्थन दिया था। इस चुनाव में मौलाना आजाद को 1841 वोट मिले थे और उनके प्रतिद्वंद्वी एम.एन. राय को 181 वोट मिले थे। 1942 का दौर राजनीतिक रूप से काफी अस्थिरता लिया हुआ दौर था लेकिन मौलाना आजाद ऐसे समय में भी स्थिर,अविचल बने रहे और भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव को पारित कर अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया। आंदोलन के शुरू होने से पूर्व ही कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। मौलाना आजाद को अहमदनगर किले की जेल में रखा गया। तीन साल बाद 1945 में मौलाना आजाद को रिहा किया गया। इस दौरान उनकी पत्नी का निधन हो चुका था। 1947 में संयुक्त प्रांत के मुसलमानों ने पाकिस्तान जाने का निर्णय कर लिया था उनसे मौलाना आजाद ने कहा कि 'आप अपनी मातृभूमि को छोड़कर जा रहे हैं। आपको पता भी है इसके क्या नतीजे होंगे? आपके इस तरह से कूच करते जाने से भारत के मुसलमान कमजोर पड़ जाएंगे। एक समय ऐसा भी आ सकता है जब पाकिस्तान के तमाम इलाके अपनी अलग-अलग पहचान का दावा करना शुरू कर दें, बंगाली,पंजाबी,सिंधी,बलूच खुद को अलग कौम घोषित कर दे। तो ऐसी स्थिति में पाकिस्तान में आपकी हैसियत क्या बिन बुलाए मेहमान से ज्यादा कुछ रह जायेगी? हिंदू धार्मिक रूप से आपके प्रतिपक्ष विरोधी हो सकते हैं,मगर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भ में वे आपके विरुद्ध नहीं हैं। ऐसे हालात से तो आप निपट सकते हैं लेकिन पाकिस्तान में आपको कभी भी क्षेत्रीय और राष्ट्रीय विरोध का सामना करना पड़ेगा और उस विरोध के सामने आप बेबस हो जाएंगे'। 1947 में अपने कई समकालीनों के विपरीत मौलाना आज़ाद ने इस बात पर जोर दिया कि हिंदुओं और मुसलमानों को अपनी स्थिति और हित पर हिंदुओं और मुसलमानों के रूप में विचार न करके उन्हें किसान या जमींदार,मजदूर या पूंजीपति के रूप में विचार करना चाहिए। वे मानते थे कि वास्तविक आज़ादी तब तक नहीं आ सकती हैं जब तक हर व्यक्ति को अवसर की समानता और आर्थिक आज़ादी न मिले। मौलाना आजाद इस्लामिक धर्मशास्त्र और आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली बौद्धिकों में से एक थे जो सेकुलर राष्ट्र और लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली के पैरोकार थे। राष्ट्र के निर्माण और विकास के लिए शिक्षा की भूमिका कितनी अहम है यह भारत के पहले शिक्षा मंत्री बखूबी जानते थे। इसलिए शिक्षा को सरल,सहज,अंतिम व्यक्ति तक इसकी पहुंच और शिक्षा प्रणाली को आधुनिक व कारगर बनाने के लिए कई अभिनव प्रयोग उनके द्वारा किए गए। मौलाना आज़ाद के नेतृत्व में ही देश का पहला आईआईटी 1951 में स्थापित किया गया इसके बाद 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (GC) की स्थापना की गई। इसी क्रम में सेकेंडरी एजुकेशन कमीशन,आईआईएससी,अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद,स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर और संपूर्ण देश में ख्याति प्राप्त जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की स्थापना में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके अतिरिक्त मौलाना आज़ाद ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, साहित्य अकादमी, संगीत नाट्य अकादमी और ललित कला अकादमी का गठन भी किया। मौलाना आज़ाद का मानना था कि ये संस्थान भविष्य में भारत के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण साबित होंगे। मौलाना आजाद को मुख्य रूप से उनकी विद्वता और मौलिकता के लिए याद किया जाता है और उनके जन्मदिन (11 नवंबर) को प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के तौर पर मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त उनके

द्वारा महिला शिक्षा के लिए की गई पुरजोर वकालत और 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य और निशुल्क शिक्षा की सशक्त अवधारणा के लिए भी खासतौर पर याद किया जाता है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की आत्मकथात्मक किताब 'इंडिया विंस फ़्रीडम' है जिसे उन्होंने खुद नहीं लिखा था,बल्कि उपन्यासकार और राजनीतिज्ञ हुमायूं कबीर से बोलकर लिखवाया था। जिसकी पूरी पांडुलिपि उन्होंने राष्ट्रीय अभिलेखागार को इस हिदायत के साथ सौंप दी थी कि उनकी मृत्यु के तीस वर्ष बाद उसे प्रकाशित किया जाए। इस किताब को 1988 में प्रकाशित किया गया। इसके पूर्व 1916 में जब वे जेल में थे तब उन्होंने अपनी आत्मकथा 'तज़किरा' भी लिखी थी। मौलाना आजाद को मरणोपरांत 1992 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी नवाजा गया है।

दृष्टिकोण

डॉ. कृपाशंकर चौबे

लेखक बाल कानून विशेषज्ञ तथा मप्र किशोर न्याय बोर्ड के सदस्य हैं।

सहमति की फिसलन और सपनों की उम्र

सर्वोच्च न्यायालय की तीन सदस्यीय पीठ 12 नवंबर को किशोरों के लिए सहमति से यौन संबंधों के लिए कानूनी आयु 18 वर्ष से घटाकर 16 वर्ष करने के विषय पर सुनवाई करने जा रही है जिस पर एक गंभीर सामाजिक विमर्श की आवश्यकता निर्विवाद है।

इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि सबसे पहले यह बहस वर्ष 1860 में प्रारंभ हुई थी और वर्ष 2012 तक सहमति से यौन संबंधों की उम्र 16 वर्ष निर्धारित थी किंतु वर्ष 2012 में बालकों का यौन अपराधों से संरक्षण अधिनियम पारित होने के उपरांत, बालकों की नई परिभाषा दी गई । बालकों का यौन अपराधों से संरक्षण अधिनियम 2012 की धारा 2(d) एवं किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम 2015 की धारा 2 (12) बालक को पुर्नपरिभाषित करते हुए 18 वर्ष तक के किशोर को बालक की श्रेणी में रखा गया तदनुसार सहमति से यौन संबंधों की आयु 18 वर्ष तय की गई।

भारतीय सामाजिक परिदृश्य में संयम और नैतिक आचरण जीवन के आधार भाव रहे हैं,ऐसे में निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक मान्यताओं मूल्यों और विचारधाराओं के दृष्टिगत व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लैंगिक समानता की चर्चा के बीच यह प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या 18 वर्ष से कम वय के किसी किशोर के द्वारा शारीरिक संबंधों के लिए दी गई सहमति को कानूनी मान्यता दी जाना चाहिए? क्या यह विषय केवल कानून की परिधि में है अथवा इसका भावनात्मक नैतिक औरसामाजिक मूल्य भी है?

इस विषय के समर्थक यह तर्क देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर और जीवन पर अधिकार है तथा संविधान द्वारा प्रदत्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ यही है कि व्यक्ति अपनी इच्छा से अपने जीवन का निर्णय ले सके। आधुनिक समय में किशोर शिक्षित आत्मनिर्भर और जागरूक होकर अपने अधिकारों को समझते हैं ऐसे में उनकी शारीरिक संबंध बनाने की सहमति को केवल उम्र के आधार पर नकारना उनके आत्म सम्मान और निर्णय क्षमता पर अविश्वास दर्शाता है।एक तर्क यह भी यह भी दिया जाता है कि प्रेम और शारीरिक संबंध प्राकृतिक और भावनात्मक आधार पर निर्मित होते हैं ऐसे में उन्हें कानूनी मान्यता मिलना चाहिए अन्यथा अधिकांश मामलों में निर्दोष युवकों को झूठ फंसा दिया जाता है।

यद्यपि इस विमर्श का दूसरा पक्ष कहीं अधिक संवेदनशील और गंभीर है। ऐसी सहमति को कानूनी मान्यता देना वस्तुतः किशोरों की सुरक्षा के साथ समझौता करना है। किशोरावस्था एक भावनात्मक उथल-पुथल की अवस्था है जहां तर्क और समझ के स्थान पर भावनाएं प्रधान होती हैं अतः ऐसी अवस्था में शारीरिक संबंध हेतु दी गई सहमति वास्तव में सजग निर्णय के आधार पर नहीं होती।

किशोर वय को यौन शोषण, मानसिक आघात और सामाजिक दुष्प्रभावों से बचाए जाने के लिए विचारपूर्वक सहमति की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई है। यदि यह सुरक्षा कवच हट गया तो अपराधी वर्ग द्वारा सहमति का सहारा लेकर उनके दुरुपयोग की आशंकाएं बढ़ जाएंगी। नाजुक उम्र में भावनाओं और आकर्षण के प्रभाव में बालिकाएं गलत दिशा में ले जाई सकती हैं।

अपनी वास्तविक सामाजिक प्रस्थिति छिपाकर,छल, भ्रम अथवा किसी अन्य सामाजिक पहचान के जरिए किए जाने वाले संगठित सामाजिक अपराधों में बढ़ावा होना निश्चित है। ऐसे योजनाबद्ध अपराध न केवल वैयक्तिक रूप से बल्कि सामाजिक ढांचे और परिवार व्यवस्था पर भी सीधा आघात हैं। अतः सहमति की आयु घटाना प्रकारांतर से उन नकारात्मक शक्तियों को बल प्रदान करना है, जो किसी भी प्रकार से सामाजिक स्थिरता को भंग करने का प्रयास करती हैं। यह निश्चित करना अत्यंत कठिन होता है कि किसी बालिका ने सहमति स्वतंत्र इच्छा से दी थी या किसी भावनात्मक दबाव,प्रेम प्रवंचना अथवा छल के तहत। अपराधी इस अस्पष्टता का आसानी से अपने बचाव में उपयोग करते हैं, इस प्रकार वस्तुतः यह संरक्षण और स्वतंत्रता के स्थान पर शोषण का माध्यम बन जाता है। इन दिनों ऐसे कई मामले देखने मे आये हैं जहां 16-17 वर्ष की बालिकायें असुरक्षित यौन संबंधों के कारण गर्भवती हो कर अपनी शिक्षा एवं अन्य बुनियादी चीजों से दूर हो जाती है जिसका दोनों (बालक एवं बालिका) के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के मामलों मे लगातार हो रही वृद्धि समाज के लिए चिंता का विषय है।इस प्रकार उत्पन्न हुई संतानों का निस्तारण और पालन पोषण दूसरी चिंता का विषय है।

कम उम्र में स्थापित यौन संबंध चाहे वे सहमति के आधार पर बने हों अथवा बलात, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से विनाशकारी प्रभाव ही छोड़ते हैं।

अवांछित गर्भ, विभिन्न प्रकार के संक्रमण, अपराध बोध और सामाजिक अपमान जैसी स्थितियां किशोर के भविष्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

वह उम्र जिसमें उसे शिक्षा,भविष्य और आत्म विकास के स्वप्न देखना चाहिए,भावनात्मक बोझ और मानसिक पीड़ा में उलझ जाती है।

किसान संघ ने मामले में दोषियों पर कड़ी कार्यवाही की रखी मांग

ज्वार खरीदी के 1169 ने कराया था पंजीयन, जांच में सिर्फ 25 पंजीयन असली निकले

संजय द्विवेदी

बैतूल। बैतूल जिले में समर्थन मूल्य पर ज्वार खरीदी के नाम पर बड़ी गड़बड़ी सामने आई है। जांच में पता चला है कि खरीदी माफिया ने बटाईदारी (सिकमी) के नाम पर फर्जी किसानों का पंजीयन कराकर सरकारी खरीदी में करोड़ों का नुकसान पहुंचाने की साजिश रची थी। प्रशासनिक जांच में खुलासा हुआ कि ज्वार बेचने के लिए कुल 1169 किसानों ने पंजीयन कराया था, लेकिन खेतों के सत्यापन के बाद केवल 25 पंजीयन ही वास्तविक पाए गए। बाकी 1144 पंजीयन फर्जी पाए जाने पर निरस्त कर दिए गए। अगर यह पंजीयन पास हो जाते तो सरकार को लगभग 60 करोड़ से अधिक का नुकसान या कहे कि चूना लग जाता होता। दरअसल जिले में समर्थन मूल्य पर ज्वार खरीदी को लेकर किसानों ने बड़ी संख्या में पंजीयन किये थे। पंजीयन तो हजारों की संख्या में हुए थे, लेकिन ज्वार की बोवनी केवल 25 किसानों ने ही की थी। कलेक्टर बैतूल की सूझबूझ से इस तरह का फर्जीवाड़ा सामने आ सका। यह फर्जीवाड़ा ज्वार खरीदी के समय उजागर होता, तो पूरे प्रदेश में बैतूल की छवि धूमिल होती।

शिकवे-शिकायतों के बाद हुई जांच, सामने आया फर्जीवाड़ा – इस मामले में शिकवा शिकायत के बाद कलेक्टर द्वारा करवाई गई जांच में 1169 में से सिर्फ 25 पंजीयन ही वैध पाए गए है। 1144 पंजीयन निरस्त तो कर दिए गए है, लेकिन अभी तक फर्जी पंजीयन करने और करवाने वालों के खिलाफ किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गई है। किसान संघ का कहना है कि बाजार रेट से दोगुने दाम पर समर्थन मूल्य में ज्वार खरीदने के निर्णय से

ज्वार बेचने सिंडिकेट सक्रिय हो गया था। इस सिंडिकेट के व्यापारियों ने राजस्व और सहकारी समिति से मिलीभगत कर बड़ी संख्या में पंजीयन भी करवा लिए थे। ऐसी संभावना जताई जा रही है कि इसमें राजनेताओं से जुड़े व्यापारियों के नाम होने से कार्रवाई में देरी हो रही है।

महाराष्ट्र से सस्ती ज्वार लाकर बेचने की थी योजना– जांच में यह भी सामने आया कि जिले के कुछ व्यापारी और रसूखदार महाराष्ट्र से सस्ती ज्वार (1700-1800 प्रति क्विंटल) खरीदकर उसे बैतूल जिले में समर्थन मूल्य 3699 प्रति क्विंटल पर बेचने की तैयारी में थे। फर्जी पंजीयन इन्हीं लोगों ने बटाई या सिकमी किसानों के नाम पर कराए थे। कई असली किसानों को यह तक पता नहीं था कि उनके नाम से खरीदी के लिए पंजीयन करा दिया गया है। कृषि विभाग की रिपोर्ट के मुताबिक जिले में ज्वार की वास्तविक खेती केवल 1500 हेक्टेयर में हुई, जबकि सहकारी समितियों में इसे 5234 हेक्टेयर बताया गया। इसी आधार पर 1169 किसानों के नाम पंजीयन किए गए, जबकि पिछले वर्ष केवल 210 किसानों ने ज्वार बेचने के लिए पंजीयन कराया था।

फर्जी पंजीयन करने पर नहीं हुई कार्रवाई– समर्थन मूल्य पर ज्वार बेचने, किए गए पंजीयन में किसान का नाम, यदि हो तो अथवा ठेकानामा वाले किसान का नाम के साथ ही आधार कार्ड, बैंक डिटेल्स, मोबाईल नम्बर भी दर्ज है। इतना ही नहीं, गिरदावरी में ज्वार की फसल दर्शाने वाले कर्मचारियों और पंजीयन करने वाले कर्मचारियों के नाम भी है। इसके बावजूद फर्जी पंजीयन करवाने वालों के खिलाफ अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है, जिससे इनके हौसले बुलंद है और भविष्य में भी इस प्रकार के फर्जीवाड़े किए जा सकते है। किसान संघ ने फर्जी पंजीयन करने और करवाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है, ताकि भविष्य में शासन की योजनाओं का लाभ सही सही किसान को मिल सके। किसान संघ का कहना है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के द्वारा जैसा कि केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा गया था कि केंद्र की निगरानी में उनके आधार पर सोसायटी के माध्यम से ज्वार, मक्का, धान, गेहूँ आदि की खरीदी होनी चाहिए, जिससे कि इस प्रकार के फर्जीवाडे पर रोक लगाई जा सके।

सरकार को होता करीब 60 करोड़ से अधिक का नुकसान– जिले में 5234 हेक्टेयर के पंजीयन के आधार पर औसतन प्रति हेक्टेयर 18 क्विंटल ज्वार उत्पादन मानें, तो लगभग 3.6 लाख क्विंटल ज्वार खरीदी जाती। बाजार मूल्य (1800 प्रति क्विंटल) और सरकारी दर (3699 प्रति क्विंटल) के बीच के अंतर से सरकार को लगभग 64 करोड़ का नुकसान होता। बताया गया कि अधिकांश फर्जी पंजीयन भैंसदेही, घोड़ाडोंगरी और बैतूल क्षेत्र से जुड़े हैं। सूत्रों के अनुसार यहां के कुछ प्रभावशाली लोगों ने किसानों के नाम पर फर्जी बटाई नाम तैयार कर खरीदी का लाभ उठाने की कोशिश की। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि अब तक न तो फूड विभाग ने तहसीलदारों को कोई औपचारिक पत्र भेजा है, न ही किसी थाने में एफआईआर दर्ज हुई है। सूत्रों का कहना है कि विभागीय स्तर पर इस बड़े घोटाले को दबाने की कोशिश की जा रही है।

इनका कहना है –

किसानों द्वारा करवाए गए पंजीयनों का सत्यापन करने के बाद वास्तविक किसानों की स्थिति स्पष्ट हो चुकी है तथा पटवारियों को इस संबंध में नोटिस भी जारी किए गये है कि वे ऐसी स्थिति को लेकर अपना जवाब प्रस्तुत करें और आगे ऐसी स्थिति न बने, इसके लिए प्रयास करें।

-डॉ. अभिजीत सिंह,
एसडीएम बैतूल

हमारे क्षेत्र में 290 किसानों के पंजीयन हुए थे, लेकिन जांच में केवल दो किसान ही वास्तविक पाए गए। बाकी रकबे में ज्वार की फसल थी ही नहीं। अभी सिर्फ रकबे की जांच हुई है, सिकमी या बटाई दारों की जांच बाकी है। पहले चरण में लगभग 50 प्रतिशत पंजीयन सही बताए गए थे, लेकिन कलेक्टर के आदेश पर पुनः जांच में लगभग सभी फर्जी निकले। यदि फूड विभाग से रिपोर्ट मिलती है तो एफआईआर कराई जाएगी, पर अब तक कोई पत्र नहीं मिला है।

– जीडी पाटे,
तहसीलदार बैतूल

इंडियन फार्मास्यूटिकल्स एसोसिएशन चुनावों में संजय जैन अध्यक्ष तथा प्रभाष जाटव महासचिव मनोनीत

इंदौर-देवास। इंडियन फार्मास्यूटिकल्स एसोसिएशन मध्य प्रदेश स्टेट ब्रांच के चुनाव 2025 में संजय जैन को अध्यक्ष और प्रभाष चंद्र जाटव को महासचिव नियुक्त किया गया है। इसके अलावा, स्टेट ब्रांच के अन्य पदाधिकारियों की भी घोषणा हुई है, जिनमें हिमांशु शाह उपाध्यक्ष, शांति लाल पटेल कोषाध्यक्ष और अन्य कार्यकारी सदस्य शामिल हैं! भारतीय फार्मास्युटिकल एसोसिएशन (IPA) भारत में फार्मासिस्टों का एक प्रमुख और सबसे पुरानी संस्था है इसकी स्थापना 1939 में हुई थी और इसका उद्देश्य फार्मासिस्टों के पेशेवर और नैतिक मानकों को बढ़ावा देना, फार्मेसी शिक्षा और विज्ञान का समर्थन करना और सरकार को महत्वपूर्ण व्यावसायिक मुद्दों पर सलाह देना है। यह 20 राज्य और 46 से अधिक स्थानीय शाखाओं के माध्यम से संचालित होता है।

अंतर जिला अंडर 15 क्रिकेट प्रतियोगिता के दो दिवसीय सेमीफाइनल धार व बुरहानपुर के बीच, धार मजबूत स्थिति में

धार। धार के अभिषेक जाट पीयूष मुकाती एवं आर्यन राठौड़ के उम्दा प्रदर्शन से धार मजबूत स्थिति में पहुंचा। इंदौर डिविजनल क्रिकेट एसोसिएशन के निर्देश पर धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में अंतर जिला अंडर 15 क्रिकेट प्रतियोगिता के दो दिवसीय सेमीफाइनल में आज दूसरा सेमीफाइनल धार व बुरहानपुर के बीच आरंभ हुआ । बुरहानपुर ने टॉस

जीतकर बल्लेबाजी करते हुए 86 रन पर ऑल आउट हो गई । धार के अथर्व राठौर 12 ओवर में आठ ओवर मेडन डालते हुए बारह रन दिए । धार जिला लक्ष्य का पीछा करते हुए 69 रन एक विकेट पर बना लिए। इस प्रकार धार जिला बुरहानपुर टीम से 17 रन पीछे तथा उसके 9 खिलाड़ी खेलने शेष रहे । धार के अभिषेक जाट ने 41 रन तथा पियूष मुकाती ने 18 रन बनाकर नाबाद खेल रहे हैं। मैच के प्रारंभ में आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी धर्मेंद्र जोशी का पुष्प गुच्छ से स्वागत जिला क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रदीप जोशी कीका भाई, प्रमोद पाठक एवं मोइस रहमान ने किया। धर्मेंद्र जोशी ने टीम के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। दोनों टीमों के खिलाड़ियों को कड़ी मेहनत कर अपने लक्ष्य के प्रति पूरी ईमानदारी से कार्य करने एवं अपने आप को प्रत्येक कार्य में झोंक देने के लिए प्रेरित किया। आज पदाधिकारीगण एवं खेल प्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन रामगोपाल शर्मा द्वारा किया गया।

उपाध्याय विभंजनसागरजी मुनिराज ससंघ का भव्य पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम सानंद सम्पन्न

बालक – बालिकाओं , महिलाओं के द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया

धार। दिगंबर जैन समाज धार में विराजित उपाध्याय श्री विभंजनसागरजी मुनिराज का ससंघ चातुर्मास के समापन पर पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में समाज के बालक - बालिकाओं व महिलाओं के द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया । द्वीप प्रज्वलन व शास्त्र भेंट समाज के पदाधिकारीयो द्वारा किया गया पादप्रक्षालन का लाभ समाज रत्न नरेशकुमार श्रेणिक कुमार गंगवाल परिवार को मिला ।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी गुरुदेव की पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य प्रियंका बांछल राजेंद्र जी लक्ष्मी जी कुसुमजी बांछल परिवार को एवं मुनिश्री विश्वज्ञेय सागरजी की पिच्छिका नेहा संजय छाबड़ा परिवार को मिला ।

दिगंबर संत मयूरपंख की पिच्छिका कोमलता मृदुता व निशप्रहिता के कारण सदैव अपने साथ रखते है और हर वर्ष चातुर्मास की समाप्ति पर नई पिच्छिका धारण करते है - उपाध्याय श्री विभंजनसागरजी

इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि दिगंबर संत मयूरपंख की पिच्छिका कोमलता मृदुता व निशप्रहिता के कारण सदैव अपने साथ रखते है और हर वर्ष चातुर्मास की समाप्ति पर नई पिच्छिका धारण करते है ।जो संयम साधना की प्रतीक होती है कार्यक्रम में क्षुल्लिका 105 श्री चंद्रमति माताजी भी विशेष रूप से उपस्थित थी । कार्यक्रम के समापन में चातुर्मास में सभी सहयोगी संस्थाओं व सहयोगी सदस्यों का समाज द्वारा सम्मान किया गया । कार्यक्रम का संचालन सचिव संजय छाबड़ा द्वारा किया गया। जानकारी संजय गंगवाल द्वारा दी गई ।

वैश्य महासम्मेलन म. प्र. जिला महिला इकाई द्वारा सामाजिक सेवा प्रकल्प में गरीब बस्ती में कपड़े वितरित

धार। वैश्य महासम्मेलन म. प्र. जिला महिला इकाई द्वारा अपने वार्षिक सेवा प्रकल्प अंतर्गत गरीब बस्ती परिवारों में ऊनी, महिला, पुरुष, एवं बच्चों के कपड़ों, बिस्किट, मिठाई, आदि का वितरण किया गया। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए महिला जिला इकाई अध्यक्ष रेखा विजय मेहता ने बताया कि हमारा संगठन प्रति वर्ष सेवा प्रकल्प अंतर्गत गरीबों में इस प्रकार के कार्य करता रहता है। साथ ही आगामी कार्यक्रम में 29 नवंबर को गौ शाला में गायों को गुड़ और चारा खिलाया जाएगा। आज के कार्यक्रम में मेन इकाई जिला अध्यक्ष आशीष गोयल, जिला प्रभारी विजय मेहता, महिला इकाई संभाग अध्यक्ष सरोज सोनी, महिला जिला इकाई अध्यक्ष रेखा मेहता, सुधा जैन, वैजन्ती नाहर, उषा दिलीप जैन, आशा जैन, सरिता चौधरी, पिंकी जायसवाल, सीमा जैन, की सहभागिता से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

लायंस क्लब ऑफ देवास सिटी सर्वश्रेष्ठ सेवा सप्ताह अवॉर्ड से सम्मानित

देवास। समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए लायंस क्लब ऑफ देवास सिटी को लायंस क्लब इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3233 जी-1 द्वारा आयोजित सेवा सप्ताह सम्मान समारोह में सर्वश्रेष्ठ लायन सेवा सप्ताह अवार्ड से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में यह सम्मान क्लब अध्यक्ष लायन मनोज बिंदल, सचिव लायन भगवान गोयल एवं कोषाध्यक्ष लायन अनिल नागर को प्रदान किया। लायंस क्लब ऑफ देवास सिटी की पूरी टीम ने निर्धारित लक्ष्य के साथ कई प्रभावी सामाजिक गतिविधियां संचालित की। इंदौर में आयोजित इस सम्मान समारोह में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन अनिल खंडेलवाल एवं सेवा सप्ताह डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर लायन डॉ. राजेंद्र सोडानी की उपस्थिति में

पुरस्कार प्रदान किए गए, अतिथियों द्वारा विभिन्न क्लबो के द्वारा उनके समर्पण के साथ किए गए सामाजिक कार्यों की सराहना की। इस सम्मान समारोह में 400 से अधिक क्लब पदाधिकारीयों की उपस्थिति रही। इस उपलब्धि पर क्लब सदस्य एमजेएफ लायन औसाफ कुरैशी, लायन एम.के. नागर, लायन आर. सी. पालीवाल, एमजेएफ लायन डॉक्टर के. के. धूत, लायन डॉक्टर आर. सी. शर्मा, लायन डॉक्टर योगेश वालिम्बे, लायन डॉ. एम. बी. अग्रवाल, लायन डॉ प्रकाश गर्ग, लायन मांगीलाल अग्रवाल, लायन एम. एल. डाबी, लायन ओमप्रकाश बंसल, लायन डॉ. जसमत सिंह यादव, लायन दिनेश भूतड़ा, लायन प्रमोद गुप्ता, लायन अशोक जोशी, लायन सुरेश परवाल, लायन राधेश्याम सोनी, लायन अरुणा सोनी, लायन सलमा कुरैशी ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी है।

अंतरराष्ट्रीय सहोदय सम्मेलन दुबई में सेन थॉम एकेडमी की भागीदारी

देवास/मोहन वर्मा। सेन थॉम एकेडमी, भोपाल रोड के प्रेसीडेंट श्री सुनील थॉमस और डायरेक्टर श्रीमती हैंसी थॉमस ने पहले अंतरराष्ट्रीय एवं 31वें वार्षिक सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स सम्मेलन - 2025 में भाग लिया, जो दुबई, संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित हुआ।

सम्मेलन का विषय था – 'रूटेड इन विजडम, राइजिंग विद विज़नः रीइमैजिनिंग एजुकेशन थ्रू एनईपी 2020' अर्थात् 'ज्ञान में निहित, दृष्टि के साथ अग्रसर- एनईपी 2020 के माध्यम से शिक्षा की पुनर्कल्पना'। सीबीएसई का यह ऐतिहासिक आयोजन, जो एनईपी 2020 से प्रेरित है, भारत के शिक्षा समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ क्योंकि पहली बार यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हुआ।

दो दिवसीय इस सम्मेलन में शिक्षाविदों, नवाचारकर्ताओं और स्कूल नेताओं ने भाग लिया, जिन्होंने मिलकर शिक्षा के भविष्य को आकार देने पर चर्चा की। सीबीएसई के मार्गदर्शन में और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) के अनुरूप यह सम्मेलन एक सक्रिय मंच बना,

जहाँ श्रेष्ठ शैक्षणिक प्रथाओं का आदान-प्रदान, भविष्य के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों की खोज और भारत की शाश्वत शैक्षणिक परंपराओं को वैश्विक आकांक्षाओं से जोड़ने के अवसर मिले। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, सहभागितापूर्ण सत्रों और विचारोत्तेजक चर्चाओं के माध्यम से इस आयोजन ने वैश्विक भारतीय विद्यालय समुदाय की विविधता और एकता का उत्सव मनाया। सम्मेलन में समग्र विकास, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और वैश्विक नागरिकता पर विशेष बल दिया गया। श्री सतीश कुमार सिवान, भारत के दुबई स्थित महावाणिज्यदूत, ने इस पहल की सराहना करते हुए गल्फ क्षेत्र में सीबीएसई स्कूलों की बढ़ती उपस्थिति को रेखांकित किया। श्री धीरज साहू, अतिरिक्त सचिव (DoSEL), ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के शिक्षा तंत्र को अधिक लचीला, समावेशी और भविष्य केंद्रित बना रही है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी और शिक्षक को समग्र शिक्षा मिशन के माध्यम से सशक्त बनाया जा रहा है।

मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती सुधा मूर्ति, राज्यसभा सांसद तथा पद्मश्री और पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित लेखिका एवं समाजसेविका, ने मुख्य भाषण दिया। इस अवसर पर श्री हिमांशु गुप्ता (IAS), सचिव, सीबीएसई, श्री राहुल सिंह (IAS), अध्यक्ष, सीबीएसई, डॉ. राम शंकर, निदेशक, सीबीएसई (RO एवं CoE, दुबई, यूएई), डॉ. संयम भारद्वाज, कंट्रोलर ऑफ एग्ज़ामिनेशन, सीबीएसई, डॉ. बिस्वजीत साहा, प्रोफेसर एवं निदेशक (स्किल एजुकेशन), सीबीएसई तथा डॉ. (श्रीमती) प्रज्ञा एम. सिंह, प्रोफेसर एवं निदेशक (अकादमिक), सीबीएसई भी उपस्थित रहे। सेन थॉम एकेडमी के प्रेसीडेंट और डायरेक्टर की इस वैश्विक शिक्षण यात्रा से प्राप्त अनुभव और नवोन्मेषी रणनीतियाँ निश्चित रूप से विद्यालय तथा शहर के व्यापक शिक्षा समुदाय के लिए समृद्धि और प्रेरणा का स्रोत बनेंगी।

मवेशियों में फैली संक्रामक बीमारी, उपचार में अनदेखी

संक्रामक बीमारी की रोंकथाम को लेकर लापरवाह बना पशु चिकित्सा अमला

सीधी। जिले में लंपी वायरस से संक्रमित पशुओं की संख्या ठंड में इजाफा होने के साथ ही लगातार बढ़ रही है। हैरत की बात तो यह है कि जिला मुख्यालय के बाजार क्षेत्र में ही लंपी वायरस से संक्रमित कई मवेशी सडक़ों में विचरण कर रहे हैं और पशु चिकित्सा विभाग पूरी तरह से निष्क्रिय बना हुआ है। जबकि बरसात के दिनों में भी संक्रामक बीमारियों का प्रकोप मवेशियों में तेजी के साथ फैलना शुरू हुआ था। उस दौरान भी पशु चिकित्सा अमला पूरी तरह से निष्क्रिय रहा। जिला मुख्यालय जहां विभाग के बडे अधिकारी रहते हैं वहां यदि इस तरह की लापरवाही देखी जा रही है तो ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। जानकारों के अनुसार प्रदेश के कई अन्य जिलों में भी लंपी वायरस के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए पशु चिकित्सा विभाग का अमला वहां एलर्ट है। किंतु सीधी जिले में विभागीय अमले की लापरवाही बनी हुई है। सीधी जिले में भी पशु चिकित्सा विभाग द्वारा यह दावा किया जा रहा है कि मवेशियों को संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए पूर्व में टीकाकरण कार्य किया

जा चुका है। शहरी क्षेत्र सीधी, चुरहट, रामपुर नैकिन में भी आवारा घूमते मवेशियों के टीकाकरण का दावा भी किया जा रहा है। ऐसे में सवाल खड़े हो रहे हैं कि यदि विभाग के अमले द्वारा लंपी वायरस समेत अन्य संक्रामक बीमारियों से पशुओं को बचानें के लिए पूर्व में ही टीकाकरण का कार्य किया गया है तो आखिर लंपी वायरस का प्रकोप सीधी शहर में आवारा घूमते मवेशियों में कैसे फैल रहा है। स्पष्ट है कि आवारा मवेशियों के टीकाकरण की जिम्मेदारी जिन कर्मचारियों को दी गई थी उनके द्वारा कागजो में तो उसे पूर्ण दिखा दिया गया लेकिन धरातल में टीकाकरण का कार्य नहीं किया गया है। पशु चिकित्सा विभाग के अमले को यह मालूम है कि बेजुबान मवेशी यह गवाही नहीं दे सकते कि उनको टीका लगा है या नहीं। टीकाकरण का कार्य शहरी क्षेत्र में दिन के समय विभागीय अमले द्वारा न करने की जानकारी देते हुए बताया गया है कि आवागवन होने के कारण संभव नहीं हो पाता। इस वजह से शहरी क्षेत्र के मवेशियों को रात में टीका लगाया जाता है। यदि टीकाकरण का कार्य किया जाता तो शहर में लंपी, खुरपका, मुंहपका समेत अन्य संक्रामक बीमारियों से पीड़ित पशु नजर न आते। ऐसे में स्पष्ट है कि बरसात का मौसम शुरू होने के बाद संक्रामक बीमारियों पर नजर रखने की बजाय पशु चिकित्सा विभाग पर जिम्मेदार अमला पूरी तरह से लापरवाह रहा है।

क्या है लंपी वायरस की बीमारी

गांठदार त्वचा रोग मवेशियों में होने वाला एक संक्रामक रोग है जो पॉक्सविरिडे परिवार के एक वायरस के कारण होता है। जिसे नीथलिंग वायरस भी कहा जाता है। इस रोग के कारण पशुओं की त्वचा पर गांठें होती हैं। यह रोग त्वचा और श्लेष्मा झिल्ली श्वसन और जठरांत्र संबंधी मार्ग सहित पर बुखार, बढ़े हुए सतही लिम्फ नोड्स और कई नोड्यूल व्यास में 2.5 सेंटीमीटर 1.2 इंच की विशेषता है। संक्रमित मवेशी भी अपने अंगों में सूजन की सूजन विकसित कर सकते हैं और लंगड़ापन प्रदर्शित कर सकते हैं। प्रभावित जानवरों की त्वचा को स्थायी नुकसान होता है। जिससे उनके छिपने का व्यावसायिक मूल्य कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस बीमारी के परिणामस्वरूप अक्सर पुरानी दुर्बलता कम दूध उत्पादन, खराब विकास, बांझपन, गर्भपात और कभी-कभी मृत्यु हो जाती है। बुखार की शुरुआत वायरस से संक्रमण के लगभग एक सप्ताह बाद होती है। यह प्रारंभिक बुखार 41 डिग्री सेल्सियस 106 डिग्री फारेनहाइट से अधिक हो सकता है और एक सप्ताह तक बना रह सकता है।

ट्रैक्टर पलटने से 16 वर्षीय किशोर की मौत

धान मिजाई के दौरान हुआ यह हादसा, एक की हालत गंभीर

सीधी। जिले में धान मिजाई के दौरान हुए एक हादसे में 16 वर्षीय किशोर की दर्दनाक मौत हो गई। इस दुर्घटना में एक अन्य बच्चा गंभीर रूप से घायल हुआ है। यह घटना रविवार देर रात अमिलिया थाना क्षेत्र के ग्राम चितवरिया नंबर 3 में घटित हुई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव में धान की मिजाई के लिए एक ट्रैक्टर-थ्रेशर मशीन ले जाई जा रही थी। रास्ते में एक मोड़ पर ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया। ट्रैक्टर पर चार किशोर सवार थे, जिनमें से दो बाल-बाल बच गए, जबकि दो उसकी चपेट में आ गए। हादसे में चितवरिया नंबर 3 निवासी 16 वर्षीय अनीश पटेल (पिता अवधेश पटेल) की मौके पर ही मृत्यु हो गई। वहीं, 10 वर्षीय अजय पटेल (पिता बंश बहोर) गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तत्काल जिला अस्पताल सीधी में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

घटना की सूचना मिलते ही ग्रामीणों ने तत्काल पुलिस और पंचायत को सूचित किया। सूचना मिलने पर पूर्व सरपंच रामविलास पटेल और ग्राम रोजगार सहायक संदीप तिवारी मौके पर पहुंचे। चौकी प्रभारी अजीत पांडे ने बताया कि पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर पंचनामा तैयार किया। शव को सिहावल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया, जहां पोस्टमार्टम के बाद उसे परिजनों को सौंप दिया गया।

संक्षिप्त समाचार

अनियमितताओं को रोकने के उद्देश्य से जांच दल ने किया मेडिकल दुकानों का निरीक्षण

सीहोर (निप्र)। नियंत्रक खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग के निर्देशानुसार मेडिकलों से विक्रय होने वाले वाली दवाओं एवं मेडिकल दुकानों पर अनियमितताओं की रोकथाम के उद्देश्य से निरीक्षण दल द्वारा जिले की मेडिकल दुकानों का निरीक्षण किया जा रहा है। इसी क्रम निरीक्षण दल द्वारा बकतरा एवं बुधनी क्षेत्र की मेडिकल दुकानों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जांच दल द्वारा मेडिकल दुकानों में साफ सफाई, दवाओं के क्रय-विक्रय रिकॉर्ड, एक्सपायर्ड दवाओं का रख-रखाव तथा प्रतिबंधित दवाओं के विक्रय आदि की जांच की गई। इसके साथ ही दवाओं के नमूने भी लिए गए, जिन्हें जांच के लिए भेजा गया है।जिन मेडिकल दुकानों का निरीक्षण किया गया उनमें मे. सतेंद्र मेडिकल, मे. जीवनरक्षा मेडिकल, लक्ष्मी मेडिकल, बालाजी मेडिकल, आरके मेडिकल और पियूष मेडिकल शामिल हैं।

जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सभाकक्ष में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रचना सुरेंद्र मेवाड़ा की अध्यक्षता में जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक आयोजित की गई। बैठक में स्वास्थ्य विभाग, लोक निर्माण विभाग, लोक स्वासथ्य यांत्रिकी विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, विद्युत विभाग सहित अन्य विभागों की गतिविधियों के संचालन एवं प्रगति की समीक्षा की गई। बैठक में जिला पंचायत के सदस्यों द्वारा विभिन्न मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया। बैठक में संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि अधिकारी ब्लॉक एवं ग्राम स्तरीय जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक करें और विभागीय योजनाओं का प्रभावी संचालन करें। इसके साथ ही योजनाओं की प्रगति की जानकारी भी उपलब्ध कराएं। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

कोसमी एवं भग्गुढ़ाना औद्योगिक क्षेत्रों के 48 भूखण्डों के निराकरण को लेकर हुई बैठक

बैतूल (निप्र)। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र बैतूल में शुक्रवार को कोसमी एवं भग्गुढ़ाना औद्योगिक क्षेत्रों के 48 भूखण्डों के निराकरण संबंधी बैठक आयोजित की गई। नवपदस्थ महाप्रबंधक श्री कैलाशचंद्र मानेकर द्वारा पदभार ग्रहण करने के बाद यह उनकी पहली समीक्षा बैठक रही।बैठक में आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, औद्योगिक संघ बैतूल एवं लघु उद्योग भारती बैतूल के पदाधिकारी सहित जिले के प्रमुख उद्योगपति उपस्थित रहे। बैठक के दौरान कोसमी एवं भग्गुढ़ाना औद्योगिक क्षेत्र के 48 भूखण्डों के आवंटन, उपयोग एवं निराकरण से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की गई। सभी पक्षों के बीच आपसी सहमति से भूखण्डों के त्वरित समाधान पर सहमति बनी।

आहरण एवं संवितरण अधिकारियों को दी गई स्पर्श प्रक्रिया की जानकारी

बैतूल (निप्र)। केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं के अंतर्गत वित्तीय लेनदेन को अधिक सुव्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा नई एसएनए स्पर्श प्रक्रिया लागू की गई है। इस नई व्यवस्था का जिले में प्रभावी क्रियान्वयन किए जाने के लिए आयुक्त , कोष एवं लेखा, मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देश पर जिला कोषालय बैतूल द्वारा गुरुवार को प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 41 आहरण एवं संवितरण अधिकारी शामिल हुए। कार्यक्रम को दो पालियों में संपन्न कराया गया, जिसमें एसएनए स्पर्श प्रणाली के अंतर्गत भुगतान प्रक्रिया, अनुमोदन प्रणाली और तकनीकी चरणों की विस्तृत जानकारी दी गई।

सिविल अस्पताल पिपरिया में मानसिक स्वास्थ्य शिविर: 59 लोगों की स्क्रीनिंग, 20 पॉजिटिव रोगियों का इलाज

नर्मदापुरम (निप्र)। सिविल अस्पताल पिपरिया में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ नरसिंह गेहलोत के निर्देश पर मानसिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 59 लोगों की स्क्रीनिंग की गई, जिसमें 20 पॉजिटिव रोगियों को दवा और परामर्श दिया गया। शिविर में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट नाजिया सिद्दीकी ने मनहित एप और मनकक्ष के कार्यों की जानकारी दी। डॉ अंकित गौर ने नशा, अवसाद और डिप्रेशन के लक्षणों और निदान के बारे में जानकारी एवं गर्भवती महिलाओं और किशोर-किशोरियों को मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी तथा टेलीमानस टोल फ्री नंबर 14416 की उपयोगिता और महत्व बताया गया।

मतदाताओं को किया जा रहा गणना पत्रक का वितरण

विदिशा (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण का कार्य किया जा रहा है। बीएलओ चार दिसम्बर तक घर-घर जाकर मतदाताओं से मतदाता सूची के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करेंगे। इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अंशुल गुप्ता ने बताया कि निर्वाचन आयोग से प्राप्त गणना पत्रक का वितरण किया जा रहा है। जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों में बीएलओ घर-घर जाकर प्रत्येक मतदाता को दो प्रतियों में गणना पत्रक वितरित कर रहे हैं।

जायजा : विदिशा जिले की पांचों विधानसभाओं विदिशा, बासौदा, कुरवाई सिरोज एवं शमशाबाद के बीएलओ द्वारा निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों के अनुसार एसआईआर के तहत संपादित किए जा रहे कार्यों का स्थानीय एसडीएम द्वारा जायजा लिया जा रहा है। उनके द्वारा बीएलओ के कार्यों का औचक निरीक्षण कर कसावट लाई जा रही है। एसडीएम की उपस्थिति में बीएलओ द्वारा गणना पत्रक का वितरण किया गया। इसमें मतदाता से जुड़ी जानकारी दर्ज कर उसकी एक प्रति मतदाता को दी जाएगी। मतदाता गणना पत्रक में जानकारी दर्ज करने के बाद हस्ताक्षर अवश्य करें। निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर वर्ष 2003 की मतदाता सूची उपलब्ध है। उससे मतदाता अपनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कलेक्टर ने कहा है कि सभी मतदाताओं को गणना पत्रक प्रदान कर दिया जाएगा। मतदाता इसे भरकर बीएलओ को उपलब्ध कराएं, जिससे बीएलओ ऑनलाइन जानकारी दर्ज कर मतदाता का सत्यापन कर सकें।

न्याय तक सबकी पहुँच के संदेश के साथ निकली जागरूकता मैराथन दौड़

न्यायोत्सव के अंतर्गत प्रधान जिला न्यायाधीश ने दिखाई हरी झंडी

विदिशा (निप्र)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के निर्देशन में आज रविवार को मैराथन दौड़ के माध्यम से न्यायोत्सव के संदेशों का संप्रेषण किया गया है। न्यायोत्सव के तहत रविवार को जागरूकता मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री शेख सलीम ने समस्त न्यायाधीशों की उपस्थिति में न्याय तक सबकी पहुँच के संदेश के साथ मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मैराथन दौड़ का शुभारंभ जिला न्यायालय विदिशा के परिसर से शुरू होकर पीतल मिल इंडस्ट्रियल एरिया तक हुआ तथा पुनः न्यायालय परिसर में इसका समापन हुआ। इस आयोजन में न्यायाधीशगण, पुलिस प्रशासन, अधिवक्ता, पत्रकार, पैरालीगल वालेंटियर्स, न्यायालयीन कर्मचारी तथा आमजन उत्साहपूर्वक शामिल हुए। आयोजन के दौरान

राष्ट्रीय एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसके माध्यम से आम नागरिकों को उनके अधिकारों और विधिक सहायता योजनाओं के प्रति जागरूक किया गया। इस अवसर पर विशेष न्यायाधीश श्री जी.सी. शर्मा, अन्य न्यायाधीशगण, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री नितेंद्र सिंह तोमर, अभिभाषक संघ विदिशा के अध्यक्ष श्री संतोष शर्मा, सचिव श्री राजेंद्र दांगी सहित न्यायालय के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने थाना कोतवाली विदिशा एवं थाना सिरोंज में दर्ज प्रकरणों के फरार आरोपियों की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए नगद इनाम देने की घोषणा की है। थाना कोतवाली विदिशा में दर्ज अपराध प्रकरण क्रमांक 347/2025 के फरार आरोपी खेमचंद पुत्र हरप्रसाद कुशवाह एवं संजू बाबा उर्फ संजय शर्मा निवासीगण तोपपुरा किले अन्दर विदिशा की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी में मदद करने वालो को क्रमश : तीन-तीन हजार रूपए प्रत्येक पर एवं थाना सिरोंज में दर्ज अपराध प्रकरण क्रमांक 412/2025 के फरार आरोपी राजेन्द्र पुत्र गोपीलाल रघुवंशी उम्र 50 साल निवासी ग्राम बगरोदा थाना पथरिया जिला विदिशा की सूचना देने, गिरफ्तारी में मदद करने वालो को तीन हजार रूपए नगद इनाम घोषित किया गया है सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

कलेक्टर ने खेत में देखी नरवाई प्रबंधन क्षेत्र के नवाचारों को

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले में धान की पराली नरवाई प्रबंधन के क्षेत्र में नवाचारों के माध्यम से पर्यावरण और मिट्टी की जैविक उर्वरा शक्ति को बढ़ाने वाले सहयोगी जैविक मित्रों की क्षति को रोकने की पहल की जा रही है। बेलर मशीन युक्त ट्रैक्टर कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने रविवार को ढोल खेड़ी के कृषक अंकित मेहतो के खेत में पहुंचकर बेलदार मशीन से नरवाई प्रबंधन के क्षेत्र में किया जा रहे कार्यों का जायजा लिया है ।आईटीसी एफपीओ के माध्यम से वेलर मशीन का प्रदर्शन किया जा रहा है आईटीसी के मैनेजर पवन कुमार शर्मा ने बेलर मशीन की कार्य प्रणाली की बिंदुवार जानकारियां साझा की गई है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बेलर मशीन के कार्यों में विशेष रुचि दिखाते हुए उन्होंने शासन स्तर पर जिले से बेलर मशीनों पर अनुदान संबंधी प्रस्ताव प्रेषित करने के निर्देश कृषि विभाग के अधिकारियों को दिए हैं उन्होंने कहा कि केंद्रीय कृषि मंत्री के संज्ञान में उपरोक्त जानकारी लाई जाए ताकि विदिशा जिला बेलर मशीन के मामले में अग्रणी हो सके। उन्होंने संग्रहित की गई नरवाई का बहुसदोपयोग पर बल देते हुए किराए से बेलर मशीन संचालित कराने के संदर्भ में पहल करने के निर्देश कृषि विभाग के अधिकारियों को दिए गए हैं। धान की पराली खेत से उठाने का काम रही है चौपाल सागर जिन किसान भाईयों ने अपने खेतो में धान की फसल लगाई थी और धान की कटाई हार्वेस्टर के द्वारा करवा चुके है ऐसे खेतो में धान कटाई के उपरांत धान की पराली शेष रह जाती है। उक्त शेष पराली के कई उपयोग है जिनमें जिनमें कम्पोस्ट बनाना, बायोगैस बनाना, बायो-सीएनजी बनाना और बिजली उत्पादन लव करना आदि । उक्त उपयोग करने हेतु विदिशा जिले में आई.टी.सी. चौपाल सागर कंपनी द्वारा कृषकों के खेतो से बिना किसी लागत से पराली उठाकर खेत साफ किया जा रहा है । उक्त कार्य हेतु कंपनी ने रायसेन के रतनपुर ग्राम में बायोधन केन्द्र स्थापित किया है । उक्त केन्द्र के अंतर्गत पराली उठाने वाली मशीने विदिशा जिले में भी चल रही है । कृषक भाई चौपाल सागर विदिशा में संपर्क करके अपने खेतो से पराली उठवाने का कार्य करवा सकते है। आज रविवार को विदिशा तहसील के ग्राम ढ़ोल खेड़ी में उक्त कंपनी द्वारा कृषक के खेतो में धान कटाई उपरांत बची हुई नरवाई को उठाने का प्रदर्शन कई कृषकों की उपस्थिति में किया ।

जिले बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर किया जा रहा है एसआईआर में मैपिंग कार्य

रायसेन (निप्र)। जिले में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशन में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण-2025 एसआईआर की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। बीएलओ द्वारा मतदान केंद्र अंतर्गत घर-घर जाकर सर्वे, मतदाताओं की मैपिंग का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में गौहरगंज एसडीएम श्री चंद्रशेखर श्रीवास्तव द्वारा मंडीदीप के वार्ड क्रमांक 24 में पहुंचकर बीएलओ द्वारा किए जा रहे सर्वे, मैपिंग कार्य का निरीक्षण किया गया और बीएलओ से जानकारी ली गई। साथ ही मतदाताओं से भी संवाद कर एसआईआर की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त मतदान केंद्र सांकल, तिनसुआ ग्राम मदनी सहित अन्य मतदान केंद्र क्षेत्र में बीएलओ द्वारा किए जा रहे कार्य का अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि जिले में एसआईआर की प्रारंभ हो गई है तथा बीएलओ द्वारा 04 नवम्बर से मतदाताओं के घर-घर जाकर सर्वे किया जा रहा है। यह प्रक्रिया 04 दिसम्बर तक जारी रहेगी। विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान तीन बार बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर सर्वे किया जाएगा। बीएलओ द्वारा मतदाता को गणना पत्रक प्रदान किया जाएगा जिसमें मतदाता को अपना नाम या अपने परिजन का नाम पिछले एसआईआर में मिलान या लिंक करने में मदद करेगा। मतदाता या बीएलओ मिलान/लिंकिंग के लिए पिछले एसआईआर के ऑल इंडिया डाटाबेस की सहायता ले सकते हैं। सर्वे उपरांत मतदाता सूची के प्रारूप का प्रकाशन 9 दिसंबर को किया जाएगा। ऐसे निर्वाचकों को नोटिस जारी किए जाएंगे जिनके नामों का पिछले एसआईआर से मिलान/लिंकिंग नहीं हो सका है।

अपर कलेक्टर ने एसआईआर के संबंध में अमलाहा के मतदान केंद्र का किया निरीक्षण

- बीएलओ, जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों से एसआईआर के संबंध में की चर्चा, दिया मार्गदर्शन
- एसआईआर के अंतर्गत घर-घर जाकर किए जा रहे हैं गणना पत्रक वितरित

सीहोर (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची को अद्यतन एवं त्रुटिरहित बनाने के लिए मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया संचालित की जा रही है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार एसआईआर प्रक्रिया के प्रथम चरण में जिले के सभी बूथ लेवल अधिकारी घर-घर जाकर मतदाताओं से संपर्क कर रहे हैं और गणना पत्रक वितरित कर रहे हैं। अपर

कलेक्टर श्री वृंदावन सिंह ने जिले के अमलाहा स्थित मतदान केंद्र पहुंचकर एसआईआर प्रक्रिया की प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने बूथ लेवल ऑफिसर्स (बीएलओ), बूथ लेवल एजेंटों एवं जनप्रतिनिधियों से चर्चा कर एसआईआर प्रक्रिया के सुचारू संचालन के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन दिया। अपर कलेक्टर श्री सिंह ने इस दौरान नागरिकों से भी चर्चा की और उन्हें गणना पत्रक भरकर बीएलओ के पास जमा करने के लिए प्रेरित भी किया। उन्होंने मतदाताओं को प्रेरित करते हुए कहा कि बीएलओ प्रत्येक मतदाता के घर तीन बार जाएंगे और गणना पत्रक भरने में मतदाताओं की मदद भी करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि नागरिकों से किसी प्रकार का दस्तावेज नहीं मांगा जा रहा है, केवल गणना पत्रक में मांगी गई जानकारी को भरकर बीएलओ को देना है। उन्होंने उपस्थित नागरिकों से अपील की कि वे इस कार्य में सहयोग करें ताकि जिले की मतदाता सूची पूर्णतः शुद्ध और त्रुटिरहित बन सके। निरीक्षण के दौरान एसडीएम श्रीमती स्वाति मिश्रा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

एसडीएम एवं अन्य अधिकारियों द्वारा दिया जा रहा मार्गदर्शन

कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार एसआईआर के संबंध में जिले के सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं संबंधित अधिकारियों द्वारा भी अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया जा रहा है और बीएलओ को मार्गदर्शन दिया जा रहा है। इसके साथ ही सभी अधिकारी मतदाताओं को इस एसआईआर प्रक्रिया के गणना पत्रक भरने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

चरणबद्ध रूप से संचालित हो रही है एसआईआर प्रक्रिया

उल्लेखनीय है कि निर्वाचन आयोग द्वारा इस विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया को तीन चरणों में संचालित किया जा रहा है। प्रथम चरण में घर-घर जाकर गणना पत्रक भरने एवं सत्यापन का कार्य 4 नवम्बर से 4 दिसम्बर 2025 तक संचालित किया जा रहा है।

इसके पश्चात 9 दिसम्बर 2025 को प्रारूप मतदाता सूची प्रकाशित की जाएगी, जिस पर 8 जनवरी 2026 तक दावे एवं आपत्तियाँ आमंत्रित की जाएंगी। सुनवाई एवं प्रमाणीकरण की प्रक्रिया 31 जनवरी 2026 तक पूर्ण की जाएगी तथा 7 फरवरी 2026 को अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित की जाएगी। इस अभियान का उद्देश्य जिले की मतदाता सूची को पूर्णतः शुद्ध, अद्यतन एवं त्रुटिरहित बनाना है ताकि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची से वंचित न रहे और कोई अपात्र नाम सूची में शामिल न हो।

विंध्य को बड़ा तोहफा, रीवा-दिल्ली हवाई सेवा शुरू

सीएम बोले-विंध्य से सीएम रहे, तब रीवा के लिए पहले रेल तक नहीं थी, अब विमान जा रहे

भोपाल। सोमवार से रीवा और दिल्ली के बीच विमान सेवा की शुरुआत हो गई है। सीएम डॉ. मोहन यादव ने 72 सीटर विमान सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मंत्रालय से दिल्ली-रीवा हवाई सेवा के वर्चुअल शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम डॉ मोहन यादव ने कहा, रीवा-दिल्ली हवाई सेवा के शुभारंभ के अवसर पर मुझे प्रसन्नता हो रही है। 24 घंटे के हवाई यातायात से रीवा जुड़ रहा है। पूरा विंध्य के क्षेत्र में पुराने जमाने में मुख्यमंत्री भी रहे, बड़े-बड़े लोग रहे। लेकिन, कैसी स्थिति थी मैं अपनी बात बताता हूं कि मुझे तो रेल भी नहीं मिलती थी। रीवा तक जाने के लिए सतना तक रेल से जाते थे। रीवा तक आने के लिए रेल भी नहीं थी और अब रीवा को हवाई जहाज इंदौर से भी मिलेगा और दिल्ली से मिल रहा है।

मैहर-चित्रकूट जैसे तीर्थ स्थलों की यात्रा आसान होगी- सीएम ने कहा मैहर की शारदा माता हों, चित्रकूट के राम हों हमारे तीर्थ स्थलों के लिए हवाई सेवा मिलेगी। प्रधानमंत्री जी ने उडान योजना से हवाई अड्डों को जोड़ने का प्रयास किया है। रीवा सीधी सिंगरौली सतना इस पूरे माइनिंग के सेक्टर में एक नया अध्याय जुड़ रहा है। हवाई पट्टी को बड़ा करने और 24 घंटे हवाई यातायात शुरू करने के लिए बिजली की गति से काम हुआ है। सीएम ने कहा, स्थापना दिवस के मौके पर सारी औपचारिकता पूरी हुई थी और आज हवाई जहाज दिल्ली के लिए उड़ान भरने को तैयार है। इस हवाई यातायात की कई कारणों से आवश्यकता है। राज्य के अंदर वित्तीय संचालन के लिए जबरदस्त लाभ मिलेगा। रीवा से दिल्ली जाने में 15 घंटे लगते हैं अब 120 मिनट लगेंगे। अब मात्र तीन घंटे में दिल्ली से रीवा पहुंचेंगे।

डिप्टी सीएम बोले- बाबा महाकाल से सीधे जुड़ेगा विंध्य क्षेत्र- रीवा में हुए कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ल ने कहा- रीवा से भोपाल जो फ्लाइट चलती है वो केन्द्र सरकार की स्कीम से चलती है। लेकिन रीवा से दिल्ली 72 सीटर विमान शुरु हो रहा है। और रीवा से इंदौर इंडिगो एयरलाइंस का विमान शुरु होगा वो विंध्य से बाबा महाकाल को जोड़ने का काम करेगा। ये स्टेट की योजनाओं से हुआ है। डिप्टी सीएम ने कहा- मुख्यमंत्री जी ने निवेश को आमंत्रित करने के लिए जो 14 पॉलिसी बनाई थी उनमें एक एमपी की एविएशन पॉलिसी भी थी। यदि वो पॉलिसी नहीं होती तो रीवा इंदौर और रीवा से दिल्ली की उडान का सपना साकार नहीं हो पाता। आज रीवा में उत्सव मनाया जा रहा है। एक सपना जो हम देखा करते थे लेकिन वो पूरा होगा उसकी कल्पना लोगों को नहीं होती थी। 2014 से जो प्रयास चल रहा है वो आज अंतिम रुप ले रहा है। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा- कल आपके आने का कार्यक्रम था दिन में मुख्यमंत्री जी का फोन आया कि वर्चुअल जुड जाएंगे तो हमने कहा कि आप ये बात रात में बताईएगा कि वर्चुअल जुडेंगे ताकि यहां जो तैयारियां चल रहीं हैं वो पूरी हो जाएं। रीवा से दिल्ली के बीच विमान सेवा सप्ताह में तीन दिन चलेगी। अलाइंस एयर एविएशन कंपनी की 72 सीटर फ्लाइट मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को चलेगी।

एमपी में शीतलहर...भोपाल, इंदौर-उज्जैन ठिठुरे

राजगढ़ सबसे ठंडा, पारा 8 डिग्री से नीचे, 20 जिलों में कोल्ड वेव चलेगी

भोपाल। पहाड़ों में बर्फबारी से मध्यप्रदेश ठिठुर गया है। नवंबर में ही पारा रिकॉर्ड लुढ़क गया है। सोमवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर समेत 20 जिलों में शीतलहर का अलर्ट है। रविवार रात को 10 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे रहा। राजगढ़ प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 7.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, इंदौर और भोपाल में बीती तीन रातों से यह 9 डिग्री के नीचे चल रहा है। मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल में तापमान 8.8 डिग्री और इंदौर में 7.9 डिग्री रहा। ग्वालियर में 10.5 डिग्री, उज्जैन में 11 डिग्री और जबलपुर में पारा 10.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बर्फबारी हो रही है। इससे उत्तरी हवाएं सीधे एमपी में आ रही है। इस वजह से उत्तरी हिस्से के जिलों में शीतलहर असर है। पिछले 2 दिन में भोपाल, राजगढ़, सीहोर, इंदौर और शाजापुर में तीव्र शीतलहर का प्रभाव रहा, जबकि रीवा, शहडोल और जबलपुर में भी शीतलहर चली। सोमवार को भोपाल, इंदौर, आगर-मालवा, राजगढ़, सीहोर, देवास, उज्जैन, शाजापुर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, रीवा, मऊगंज, सतना, पन्ना, मैहर, कटनी, जबलपुर, उमरिया और शहडोल में शीतलहर का अलर्ट है। शनिवार-रविवार की रात में कई शहरों में रिकॉर्ड ठंड रही।

पारा 10 डिग्री के नीचे आ गया। भोपाल में नवंबर का पिछले 10 साल का रिकॉर्ड टूट गया। यहां न्यूनतम तापमान 8 डिग्री रहा, जो साल 2015 के बाद सबसे कम है। इंदौर में पारा 7 डिग्री रहा। यहां पिछले 25 साल में नवंबर में इतनी सर्दी कभी नहीं पड़ी। यहां नवंबर की ठंड का ओवरऑल रिकॉर्ड 1938 का है। जब पारा 5.6 डिग्री पर पहुंचा था। इंदौर के साथ राजगढ़ में भी पारा 7 डिग्री दर्ज किया गया। लगातार चौथी रात राजगढ़ में पारा सबसे कम रहा। ग्वालियर, उज्जैन और जबलपुर में भी तापमान लुढ़का है।

उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग की 2 वर्ष की उपलब्धियों की समीक्षा

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम योजना एक महत्वाकांक्षी योजना, सतत निगरानी की आवश्यकता: मंत्री कुशवाह

भोपाल। उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना एक महत्वाकांक्षी योजना है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के व्यापक अवसर सृजित किए जा सकते है। मंत्री श्री कुशवाह ने विभाग की 2 वर्षो की उपलब्धियों की समीक्षा के दौरान पीएमएफएमई योजना की सतत निगरानी ने निर्देश अधिकारियों को दिये। उन्होंने कहा कि फरवरी 2026 तक योजना की शत-प्रतिशत लक्ष्य पूर्ति की जाए।

मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि उद्यानिकी गतिविधियाँ ग्रामीण अंचल से शहरों तक संचालित की जाती है। प्रदेश में उद्यानिकी उत्पादों को लगातार प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने निर्देश दिये कि बड़े शहरों के आसपास सब्जी के साथ साथ फूल उत्पादन के क्लस्टर भी विकसित किये जाये। मंत्री श्री कुशवाह कहा कि शहरी क्षेत्रों में स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी और मेले भी आयोजित किये जाने चाहिए।

उन्होंने एमपी एग्रो तथा उद्यानिकी विभाग की विभिन्न योजनाओं के तहत किसानों को वितरित किये जाने वाले उपकरण व अन्य सामग्री का भौतिक सत्यापन कराये जाने के निर्देश भी दिये।

आयुक्त उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण श्री अरविन्द दुबे ने बताया कि प्रदेश में गत 2 वर्षो में उद्यानिकी क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज कराई है। इन 2 वर्षो में उद्यानिकी फसलों का रकबा में 2 लाख 43 हैक्टेयर तथा उत्पादन में लगभग 36 लाख मैट्रिक टन की वृद्धि दर्ज की गई है। संरक्षित खेती के तहत 1573 हैक्टेयर क्षेत्र का विस्तार किया गया है। आयुक्त श्री दुबे ने बताया कि प्रदेश में उद्यानिकी विकास के लिये 3 सेक्टर आफ एक्सीलेंस मुरैना में आलू, छिंदवाड़ा में नीबूवार्गीय तथा हरदा में आम एवं सब्जी के विकसित किये जा रहे है। उन्होंने बताया कि पीएमएफएमई (PMFME) योजना में चालू वित्त वर्ष 2025-26 में 3 हजार 113 सूक्ष्म उद्यमियों को 108 करोड़ का अनुदान प्रदान किया जा चुका है। योजना की नियमित समीक्षा की जा रही है।